सम्पादकीय

महाविद्यालय के विकास के लिए कई प्रयास किये जा रहे हैं। वार्षिक पत्रिका ''अनुदीप्ति'' इसी प्रयास की कड़ी है। महाविद्यालय का प्रकाशन की दिशा में बढ़ता कदम, जो विद्यार्थियों की लेखनी को दिशा प्रदान करेगा। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नये परिवर्तन यह विचारने पर मजबूर कर देते हैं कि इस परिपेक्ष्य में हम अपने आप को कहाँ पर रखते हैं। क्या इन परिवर्तनों और नवाचारों को अपना कर हम अपना अस्तित्व परिवर्तन कर सकते हैं।

'अनुदीप्ति'' में विद्यार्थियों ने विविध रंग अपने इस केनवास पर बिखेरे हैं, चाहे वह सांस्कृतिक जानकारी हो, मूल्य हो या विभिन्न प्रकार की कहानी, कविता ये सभी रंग ''अनुदीप्ति'' की वाटिका को सुसज्जित करते है, सुगंधित करते है। आशा है, आप सभी पाठकों को यह नवीन अंक पसंद आयेगा।

शिक्षा जगत के महत्व एवं गौरव को दृष्टिगत रखते हुए "अनुदीप्ति" शिक्षा के सभी आयामों को एक मंच पर एकत्रित करने का प्रयास है। मैं इस पत्रिका के माध्यम से उन सभी शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों का आह्वान करती हूँ जो अपने देश और मानवता से प्रेम करते है और अंधेरी रातों में पूरी मजबूती के साथ उजाले का संदेश देते हैं। उन्हे एक मंच पर लाना हमारा संकल्प है। इसके माध्यम से शिक्षा जगत से जुड़े हुए सभी शिक्षार्थी एवं शिक्षक अपने विचारों, परामर्श, जिज्ञासाओं को प्रस्तुत करेंगे व एक दूसरे की समस्याओं पर अपनी संवेदनशीलताओं के साथ चिंतन कर सकेगें। "अनुदीप्ति" इसके लिए एक माध्यम का कार्य करके सभी के हितवर्द्धन करने का सम्पूर्ण प्रयास करेगी। इस पुनीत कार्य में आप सभी के सहयोग की अपेक्षा रहेगी। यह पत्रिका शैक्षिक जगत में हो रहे नूतन शोध, नयी अध्यापन विधियों, नये पाठ्यक्रम, नई शिक्षण विधियाँ, निरंतर हो रहे परिवर्तनों से आपको परिचित कराती रहेगी। शिक्षा जगत के सभी क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों और नई जानकारियों को भी आपके समक्ष प्रस्तुत करेगी। देश में आज भी सही अर्थों में शिक्षित लोगों की कमी है, खासकर उनमें भी संवेदनशील लोगों की, जो अपने पारिवारिक दायरे से परे सभी को अपना समझते हुए, समाज, देश की वास्तविक चिंता करते हुए कुछ न कुछ रचनात्मक कार्य कर रहे हैं।

शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों से परे, हम शिक्षा के संकीर्ण नौकरी–पेशा उद्देश्यों पर ही सिमटकर रह गये हैं। हमें शिक्षा की परिभाषाएँ नये सिरे से चिंतन करनी होगी। शिक्षार्थियों एवं पाठ्यक्रमों की अधिकता से कहीं अधिक, उनकी सार्थकता आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न तनाव के बारे में विचार करना होगा। नौनिहालों का शिक्षा प्रणाली से बढ़ता तनाव, आत्महत्या, पढ़ाई छोड़ देना आदि समस्याओं के चलते आज भी शिक्षा प्रणाली की सतत् समीक्षा की आवश्यकता है। यह कार्य आप और हम एकजुट होकर सभी लोग करने का प्रयास कर सकते हैं। इस दिशा में कुछ हद तक यह पत्रिका मार्गदर्शन करने में भी सहयोग प्रदान करेगी।

आप सभी पाठकों को मैं आश्वस्त करती हूँ कि आगे भी यह पत्रिका अज्ञानता रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश बिखेरेगी।

आपकी शुभकामनाओं, स्नेह एवं आशीष की आकांक्षा के साथ .....

राखी शर्मा
सहायक प्राध्यापक
अपोलो कॉलेज,
अंजोरा, दुर्ग

डॉ. अरूणा पल्टा
कुलपति

Dr. Aruna Palta
Vice Chancellor
Office – 0788-2359800;

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय

रायपुर नाका, दुर्ग (छ.ग.) – 491001

HEMCHAND YADAV VISHWAVIDYALAYA
RAIPUR NAKA, DURG (C.G.) – 491001
E-Mail – vicechancellor@durguniversity.ac.in

दिनाँक - 25.01.2020

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अपोलो महाविद्यालय, अंजोरा के वार्षिक पत्रिका "**अनुदीप्ति**" का प्रकाशन किया जा रहा है।

उच्च शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास, चरित्र निर्माण, राष्ट्र सेवा, नेतृत्व क्षमता जैसे श्रेष्ठ गुणों का विकास करना है। सर्वप्रथम युवाओं में देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा अपने देश और संस्कृति के प्रति गौरव की भावना को बढ़ाने की आवश्यकता है।

आशा है कि महाविद्यालय द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों को, पत्रिका में शामिल किये जाने से युवाओं को भी प्रेरणा मिलेगी।

वार्षिक पत्रिका "अनुदीप्ति" के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

(डॉ. अरूणा पल्टा)
कुलपति

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

रायपुर नाका दुर्ग (छ.ग.) 491001

ई मेल : registrar@durguniversity.ac.in वेब साइट : www.durguniversity.ac.in दूरभाष : 0788-2359100

दिनॉक - 25.01.2020

शुभकामना संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि अपोलो महाविद्यालय अंजोरा द्वारा पत्रिका **"अनुदीप्ति"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

उच्च शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्र-छात्राओं का संपूर्ण व्यक्तित्व विकास करना है। जिससे वे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के बदलते परिवेश में अपने आप को स्थापित कर सके। आज विश्व में उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के दौर में मानव संसाधन का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। जो गुणवत्ता पूर्ण उच्च शिक्षा से ही संभव है।

आशा है कि महाविद्यालय द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों को, पत्रिका में शामिल किये जाने से अन्य युवाओं को भी प्रेरणा मिलेगी।

वार्षिक पत्रिका "अनुदीप्ति" के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

(डॉ. सी. एल. देवांगन)
कुलसचिव

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

(पूर्व नाम दुर्ग विश्वविद्यालय, दुर्ग)
रायपुर नाका दुर्ग (छ.ग.)–491001
Email: registrar@durguniversity.ac.in Website: www.durguniversity.ac.in Phone 0788-2359100

क्रमांक / 2208 / उप.कुल.स.का. / 2020 दुर्ग, दिनांक 03 / 02 / 2020

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि अपोलो महाविद्यालय, अंजोरा, दुर्ग (छ.ग.) के द्वारा हर वर्ष की भाँति वार्षिक पत्रिका **"अनुदीप्ति"** का प्रकाशन किया जा रहा है। यह एक अनुकरणीय कदम है कि अनुदीप्ति के माध्यम से छात्रों की लिखने व चिंतन की क्षमता में वृद्धि के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। आपकी पत्रिका की सफलता के लिए मेरी ओर से अग्रिम शुभकामनाएं स्वीकार करें।

(भूपेन्द्र कुलदीप)
उपकुलसचिव
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

उपकुलसचिव (गोप.)
हेमचंद यादव विश्व विद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

बघेल,
अधिकारी,
दुर्ग (छ0ग0)

मोनो

कार्यालय जी0ई0रोड,दुर्ग
दूरभाष –0788–2322345
मोबा. – 9340383843

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि अपोलो महाविद्यालय ,अंजोरा,दुर्ग (छ0ग0) की वार्षिक पत्रिका " **अनुदीप्ति** " का द्वितीय सोपान 2020 का प्रकाशन किया जा रहा है ।

महाविद्यालय अपने पत्रिका के माध्यम से शिक्षा के उन्नयन एवं गुणवत्ता पर समसामयिक चर्चा कर अपने गतिविधियों पर केन्द्रित यह अप्रतिम प्रयास माना जावेगा ।

" **अनुदीप्ति** " के प्रकाशन के लिए मेरी ओर से संस्थान के इस बढ़ते कदम के लिए अनेकों शुभकामनाएं.....

(प्रवास सिंह बघेल)

स्थान–दुर्ग
दिनांक 23–01–2020

अरुण वोरा
विधायक – दुर्ग (शहर), छत्तीसगढ़
वि.स. क्षेत्र क्रं. – 64

निवासः मोहन नगर, जिला – दुर्ग, (छ.ग.)
कार्यालयः SM-38, पद्मानभपुर, दुर्ग, (छ.ग.)
फोन : 0788–2325155
मोबा: 94255 65100
ई–मेल : arun.k.vora@gmail.com

!! संदेश !!

अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि अपोलो महाविद्यालय अंजोरा जिला–दुर्ग द्वारा ''अनुदीप्ति'' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, आशा है कि यह वार्षिक पत्रिका ''अनुदीप्ति'' के माध्यम से महाविद्यालय के विद्यार्थियों को अपने विचारों एवं भावों को तथा मौलिक रचनाओं को प्रदर्शित करेगा ।

''शुभकामनाओं सहित''

प्रतिष्ठा में,
प्राचार्य,
अपोलो महाविद्यालय
अंजोरा,दुर्ग (छ.ग.)

आपका ही
अरुण वोरा
(अरूण वोरा)

धीरज बाकलीवाल
महापौर
नगर पालिक निगम, दुर्ग

आफिस : उतई रोड, लेबर कोर्ट के सामने,
नगर निगम, दुर्ग (छ.ग.)
निवास : HIG-32, पद्मनाभपुर, दुर्ग
Fax : 0788-2322148
Mob. : 9425235611, 7000831311
Email : dhirajbakliwal226@gmail.com

क्र. ......Q......

दिनांक 31/01/2020

शुभकामना–संदेश

हर्ष का विषय है कि अपोलो महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका "अनुदीप्ति" का प्रकाशन किया गया है। पत्रिका में अंकित होने पर गौरव, गर्व, सम्मान प्राप्ति की अनुभूति होती है। महाविद्यालय मे शामिल सभी पदाधिकारी एवं अध्ययनरत युवाओं से अपेक्षा है आप सभी जीवन में सत्कर्म प्रकाशित होने योग्य कार्य हेतु सदैव प्रयत्नशील रहें। यहां अध्ययन करते हुए भविष्य में राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिक बनें तथा अध्ययन पश्चात् अपनी बेरोजगारी को हराते तक सतत् प्रयत्नशील रहें। इन्ही शब्दों के साथ आप सभी को बहुत बधाई एवं शुभकामना।।

।। धन्यवाद।।

महापौर कार्यालय
दुर्ग छत्तीसगढ़

(धीरज बाकलीवाल)
महापौर
दुर्ग

प्रति,

प्राचार्य महोदय,
अपोलो कालेज, अंजोरा
दुर्ग(छत्तीसगढ़)

अध्यक्ष की कलम से .....

अत्यंत हर्ष का विषय है कि अपोलो महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका "अनुदीप्ति" का प्रकाशन करने जा रहा है। महाविद्यालय का गौरवशाली व उपलब्धियों से भरा वर्तमान तथा स्वर्णिम भविष्य है। भारत के कोने–कोने में विद्यार्थी अपनी सेवाओं से प्रकाशमान होकर महाविद्यालय का परचम लहरा रहे है। महाविद्यालय विद्यार्थियों की अर्न्तनिहित पूर्णता को शिक्षा के माध्यम से अभियुक्त कर उनके व्यक्तित्व को एक नया आयाम प्रदान करने में सफल रहा है, चूंकि शिक्षक राष्ट्र निर्माता होते है, अतः हमें पूर्ण विश्वास है कि हम अपने प्रयासों में सफल होकर राष्ट्र को अच्छे निर्माता देने में सक्षम होंगे। भारत के उज्जवल एवं स्वर्णिम भविष्य की कामना के साथ "अनुदीप्ति" का प्रकाशन पाठकों हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।

इन्ही शुभकामनाओं के साथ.....

डॉ. बी.एस. भाटिया

(अध्यक्ष)

संदेश
संचालक मण्डल

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि अपोलो महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका "अनुदीप्ति" का प्रकाशन करने जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से यहाँ अध्ययनरत् शिक्षक प्रशिक्षुओं की साहित्यिक अभिरूचि निखरकर प्रस्तुत हो पायेगी तथा यह उनकी साहित्यिक विधा को और भी अधिक मुखरित करेगा। यह भारत देश के भविष्य अर्थात् शिक्षक प्रशिक्षुओं में सृजनात्मकता एवं लेखा क्षमता को प्रोत्साहित करने में अवश्य ही सहायक सिद्ध होगी। महाविद्यालय में बेहतर प्रशिक्षण के साथ विभिन्न गतिविधियों एवं क्रियाकलापों के द्वारा शिक्षक प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया जाता है। यह पत्रिका इन्हें अपने विचार और भावों को व्यक्त करने हेतु मंच प्रदान करेगी, जिससे कि इनका सर्वांगीण विकास संभव हो पायेगा तथा महाविद्यालय देश को उत्तम नागरिक प्रदान करने में सफल होगा।

संचालक मण्डल

संजय अग्रवाल

आशीष अग्रवाल

मनीष जैन

हार्दिक शुभकामनाएँ

"साहित्य मनोभावों की अभिव्यक्ति का ससक्त माध्यम है।" साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्यकारों के उद्‌गार साहित्य की महत्ता को प्रकाशित करते है। साहित्यिक प्रकाशन किसी भी समय, स्थान, संदर्भ, संस्था के परिप्रेक्ष्य में दर्पण का ही कार्य करता है।

आर.एन.आई. से पंजीकृत पत्रिका "अनुदीप्ति" अपोलो महाविद्यालय, दुर्ग की प्रतिनिधि पत्रिका है जो 2011 से निरंतर प्रतिवर्ष प्रकाशित होते हुए परिष्कृत और प्रभावी रचना का रूप ले चुकी है। अपने में अनेक रंग, बिरंगे पुष्प समेटे हुए इसमें एक ओर जहां विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की रचनात्मक सृजनशीलता के प्रदर्शन का अवसर है।

"अनुदीप्ति" के इस अंक के प्रकाशन की पूरे अपोलो परिवार विशेषकर संपादक मंडल को बधाई। "अनुदीप्ति" केवल महाविद्यालय पत्रिका तक सीमित न होकर साहित्य जगत् में भी अपनी सशक्त दस्तक दे इसके लिए शुभकामनाएँ।

इन्ही शुभकामनाओं के साथ.....

अनुक्रमणिका

शिक्षा	*पुष्पा साहू, बी.एड.*	**16**
हमारा भारत	*राधिका पटेल, डी.एल.एड.*	**17**
मैं और मेरा रसायन शास्त्र	*चितरेखा ध्रुर्वे, बी.एड.*	**18**
नारी शिक्षा	*रंजीत कुमार सिंह, एम.एड.*	**19**
पैसे की अजब कहानी	*एम.एड.*	**20**
बुद्धि	*आरती निगम, एम.एड.*	**21-22**
माता–पिता	*मीता नेताम, बी.एड.*	**23-24**
असली वारिस	*नम्रता कंवर, डी.एल.एड.*	**25**
परिचारिका (नर्स)	*रूबी हिरवानी*	**26**
उन्नत भारत, लाचार सिस्टम	*नरेश सिन्हा*	**27-19**
शिक्षा से ना सिख पाए	*राजू वर्मा, बी.एड.*	**30**
शिक्षा में मूल्य का अभाव "एक समस्या"	*रिमझिम कुमारी, एम.एड.*	**31-32**
मुझे गर्व है कि मैं बेटी हूँ	*रोहिणी वर्मा*	**33**
मॉब लिंचिंग/भीड़ द्वारा हिंसा	*निरंजना साहू, एम.एड.*	**34**
परीक्षा	*आकांक्षा तिर्की, बी.एड.*	**35-36**
आदिवासी भारत के अध्येता	*के. सत्यमूर्ति एवं डॉ. योगेश पाउनिकर*	**37-38**
आखिरी प्रयास	*प्रिया सिहं*	**39**
सैनिक पर कविताएँ	*अकलीमा, बी.एड.*	**40**
भारत में स्त्री शिक्षा	*अंजली कुमारी, एम.एड.*	**41**
संघर्ष एक सफर	*अम्बिका, बी.एड.*	**42**
समय बड़ा अनमोल	*अंजली, एम.एड.*	**43**
हर रिश्ते के लिए कविता	*आशा, बी.एड.*	**44**
वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी)	*भूमिका ठाकुर, एम.एड.*	**45**
गंगा मैली कर गए	*राजू वर्मा, बी.एड.*	**46**
जिंदगी की राह पर	*फूलेश्वरी मेरावी, बी.एड.*	**47**
एक समय	*दीप्ति बिन्नेथ, बी.एड.*	**48**
शिक्षा का महत्व	*हेमंत कुमार, एम.एड.*	**49**
अनमोल जीवन	*जितेन्द्र कुमार शर्मा, एम.एड.*	**50**
पिता ही अपनत्व का इन्द्रधनुष	*कल्पना ठाकुर*	**51-52**

मेरे पापा	*शकुन्तला*	**53**
छात्र जीवन–यह समय फिर कभी नहीं आएगा	*संजु कुमारी, एम.एड.*	**54**
जिम्मेदारियों का बोझ	*शिवानी तिवारी, डी.एल.एड.*	**55**
शादी में दहेज का प्रभाव	*शशिभूषण साहू, एम.एड.*	**56-57**
नारी जीवन	*सुभिता ठाकुर, बी.एड.*	**58**
सफलता	*सुमन नाग, बी.एड.*	**59**
ऐ इंसान	*सुप्रिया कुमारी, एम.एड.*	**60**
चुनाव	*तोरण कुमार रजक, डी.एल.एड.*	**61-62**
स्कूल पर अल्हा	*तलेश्वर जंघेल, बी.एड.*	**63**
शिक्षा में जीवन का महत्व	*वेदप्रकाश, बी.एड.*	**64**
प्यारी सहेलियाँ	*पुष्पा साहू, बी.एड.*	**65**
क्या दोष है मेरा?	*ललिता देवी, एम.एड.*	**66**
शिक्षा की नई प्रणाली पर अनुच्छेद	*माधवी भारती, एम.एड.*	**67-68**
स्वामी विवेकानंद जी के सुविचार	*चित्ररेखा साहू, एम.एड.*	**69**
कम्प्यूटर का ज्ञान हर किसी के लिए महत्वपूर्ण	*कुलेश्वर यादव, आई.टी. विभाग*	**70-72**
शिक्षा के संबंध में स्वामी विवेकानंद जी के महान विचार	*एम.डी. नसीम अंसारी, एम.एड.*	**73**
योग एक जीवन दर्शन	*नृपेन्द्र नाथ तिवारी, एम.एड.*	**74**
स्त्री शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा	*पंकज कुमार, एम.एड.*	**75-76**
बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका	*मिथिलेश तिवारी, एम.एड.*	**77-78**
पर्यावरण प्रदूषण	*रीमा साहू, डी.एल.एड.*	**79-80**
हमर मितानिन दीदी	*अंकजीत सोनवानी, डी.एल.एड.*	**81**
जीवन एक संघर्ष	*निलेश कुमार, बी.एड.*	**82**
Signature of God	Beena G. Pillai, M.Ed.	**83**
Love me too	Nandani Kashyap,	**84**
Reflection of Learning	Ranjeeta, B.Ed.	**85**
Generation Gap	Komal Kumari	**86**
Importance of Education for Women	Akanksha Gupta, B.Ed.	**87**
Aryabhata	Akansha Singh Thakur, M.Ed.	**88**

same for all

The Importance of Education is	Anita Shalini Toppo, M.Ed.	**89**
No-Detention Policy in the School	Nabin Biswas, B.Ed.	**90-91**
Article on Honesty	Isha Sharma, M.Ed.	**92**
Education Can Change us	Sonali Das, M.Ed.	**93-94**
Women Empowerment	Rebeka Kachhap, M.Ed.	**95**
Arthritis	P. Emannual, Principal, Nursing	**96-97**
छत्तीसगढ़ के बासी	*चंदा साहू, एम.एड.*	**98**
छत्तीसगढ़ के बोली	*त्रिवेणी शोरी, एम.एड.*	**99**
कलयुग	*दीप्ति, डी.एल.एड.*	**100**

भारतीवन्दना

जय जय हे भगवति सुरभारति

तव चरणौ प्रणमामः।

नादब्रह्ममयि जय वागीवरि

शरणं ते गच्छामः।।

त्वमसि शरण्या त्रिभुवनधन्या

सुरमुनिवन्दितचरणा

नवरसमधुरा कवितामुखरा

स्मितः रूचि रूचि रामरणा ।। 1।।

आसीना भव मानसहंसे

कुन्दतुहिनशशिधवले

हर जडतां, कुरू बोधिविकासं

सितपङ्कज तनुविमले ।। 2।।

ललितकलामयि ज्ञानविभामयि

वीणापुस्तक धारिणि

मतिरास्तां नो तव पदकमले

अयि ! कुण्ठाविषहारिणि ।। 3।।

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः , गुरूर्देवो महेश्वरः। गुरूःसाक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

शिक्षा

अंधकार को दूर कर जो प्रकाश फैला दे।
बुझी हुई आशा में विश्वास जो जगा दे।।

जब लगे नामुमकिन कोई भी चीज।
उसे मुमकिन बनाने की राह जो दिखा दे वो है शिक्षा।।

हो जो कोई असभ्य, उसे सभ्यता का पाठ जला दे।
अज्ञानी के मन में, जो ज्ञान का दीप जला दे।।

हर दर्द की दवा जो बता दे.. वो है शिक्षा।
वस्तु की सही उपयोगिता जो समझाए।।

दुर्गम मार्ग को सरल जो बनाए।
चकाचौंध और वास्तविकता में अंतर जो दिखाए।।

जो ना होगा शिक्षित समाज हमारा।
मुश्किल हो जाएगा सबका गुजारा।।

इंसानियत और पशुता के बीच का अंतर है शिक्षा।
शांति, सुकुन और खुशियों का जन्तर है शिक्षा।।

भेदभाव, छुआछूत और अंधविश्वास।
दूर भगाने का मंतर है शिक्षा।।

जहां भी जली शिक्षा की चिंगारी।
नकारात्मकता वहां से हारी।।

जिस समाज में हो शिक्षित सभी नर–नारी।
सफलता–समृद्धि खुद बने उनके पुजारी।।

इसलिए आओ शिक्षा का महत्व समझे हम।
आओ पूरे मानव समाज को शिक्षित करें हम।।

पुष्पा साहू
बी.एड.

हमारा भारत

सागर जिसके पांव पखारे, हिमालय जिसका सरताज है।
गूंज रहा दुनिया में डंका भारत का, खुशियों का दिन आज है।।

साथियों जैसा कि हम सभी जानते हैं अनेक वीरों और विरांगनियों के कुर्बानी और अथक संघर्षो के बाद हमें आजादी मिली और वो शुभ दिन 15 अगस्त 1947 को था, जिस दिन पूरब से सूर्य उदित हुआ और भारत के लिए एक नयी सुबह लेकर आया, लेकिन अभी हमारी शान सुनहरी नहीं थी। कईयों चुनौतियां थी और उनसे निपटना था।

भारत स्वतंत्र तो हो गया, परंतु स्वचलित होने के लिए हमारे पास न कोई नियम कानून ना था और ना ही कोई व्यवस्था थी। फिर बाबा साहेब अंबेडकर और विभिन्न महापुरूषों द्वारा दिन–रात एक करके भारत के लिए लिखित संविधान तैयार किया गया। संविधान लेखन की प्रक्रिया में पूरे 2 साल 11 महीनें और 18 दिन का समय लगा। हमारे इस संविधान में दुनिया के विभिन्न आदर्शों को संजोया गया। संपूर्ण जनमानस का कल्याण उनकी उन्नति तथा भारत वर्ष की संपन्नता की नींव रखी गई और अंततः 26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान लागू हुआ। इसी दिन हम स्वचलित हुए, गणतंत्र हुए और हमारी शाम सुनहरी हुई।

इस प्रकार हमारे पूर्वजों के संघर्ष उनके मेहनत व हमारे संविधान की सुसज्जिता और प्रत्यक्षता ने हमें व हमारे भारत को विश्व का सबसे बड़ा गणतंत्र व लोकतंत्र होने का गौरव प्रदान किया।

देशभक्तों को यह प्रेरणा देते है कि हम यूं ही विभिन्नता में एकता और अखंडता अपनायें रखें, जिसके लिए दुनिया भारत को सलाम करती है।

राधिका पटेल
डी.एल.एड.

मैं और मेरा रसायनशास्त्र

न ये केमेस्ट्री होती, और न मैं उसका सब्जेक्ट होता।
अभी प्रैक्टिकल के वक्त एक लड़की नजर आयी।
उसकी नाक टेस्ट ट्यूब सी थी, बातों में ग्लूकोज सी मिठास थी।
अंधेरे में वह चमकती है, रेडियम मैं समझता था।
जब उससे आँख लड़ी एक रिवोसियल रिएक्शन हुआ।
लव का प्रोडक्शन हुआ है, अब तो उसके घर के चक्कर लगने लगे
ऐसे जैसे न्यूक्लियस के चारों ओर इलेक्ट्रॉन घूमता है।
जिस दिन हमारे प्यार का कन्फरमेशन था, उसके डैड से मेरा इन्ट्रोडक्शन था।
शायद हमारी शादी का ख्याल उसके डैडी के मन में आया हो,
इसलिए उसने मुझे चाय पर बुलाया हो।
जब मैंन उससे कहा कि हम आपकी बेटी से शादी करना चाहते है,
यह सुनकर वो उछल पड़े ऐसे जैसे टेस्ट ट्यूब से सोडियम का टुकड़ा निकल पड़ा हो।
उन्होंने मुझसे कहा पहचानों अपनी औकात, गोल्ड कभी नहीं मिल सकता इन्कम के साथ।
इस प्रकार उन्होंने तोड़ दिया, हमारा अरमानों भरा बीकर,
हम रह गए बेंजिल ऐल्डिहाइड का कड़वा घूंट पीकर।
हमारा प्यार रह गया, अब से हाइड्रोकार्बन की तरह,
अब हम घूमते है गली–गली आवारा हाइड्रोजन की तरह।

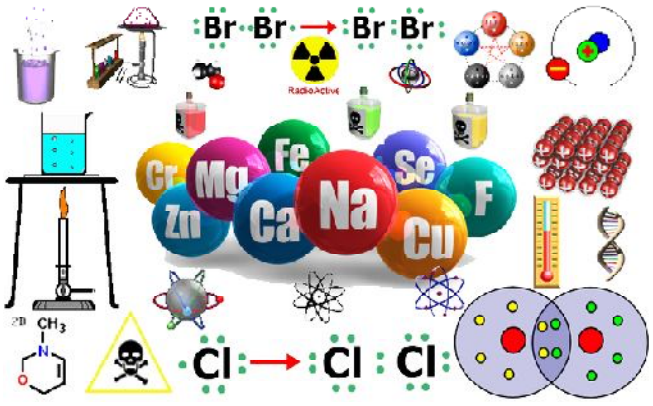

चितरेखा ध्रुर्वे
बी.एड.

नारी शिक्षा

शिक्षा जीवन का अभिन्न अंग है। बिना शिक्षा मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। शिक्षा जीवन के हर पहलु को असर करती है, इस तरह शिक्षा स्त्री पुरूष दोनों का समान हक है। अगर भारत जैसे विकसित देशों में स्त्रियों को शिक्षित बनाने के लिये कोई महत्व नहीं दिया गया। अन्य देशों की तरह भारत भी एक विकसित देश है। जिसमें पुराने समय की तुलना में आज हर एक जगह प्रगति और विकास हो रहा है । पुराने समय में नारी का कर्तव्य घर के काम करना, घर संभालना आदि कामों को ही महत्व दिया जाता था। पहले नारी की पढ़ाई को लेकर कोई ज्यादा व्यवस्था और ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता था, लेकिन बदलते समय के साथ इसमें भी परिवर्तन आया है।

नारी के शिक्षा को लेकर आजकल कई योजनायें आई है और नारी को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का मौका दिया जा रहा है। आज के समय में नारी को शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। नारी पढ़ी–लिखी होगी तो आने वाली पीढ़ि का निर्माण भी पढ़ा लिखा होगा। आज हमारे भारत देश में शिक्षा का काफी प्रचार हो गया है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या का करीब 73 प्रतिशत भाग शिक्षित है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 45 में ये प्रावधान है कि 17 वर्ष की आयु के बच्चों को मुफ्त शिक्षा देना राज्य का कर्त्तव्य है। भारत में महिलाओं का 64.60 प्रतिशत भाग शिक्षित है।

नारियों में शिक्षा की कमी के अनेक कारण रहे है। सबसे बड़ा कारण तो हमारी सदियों की गुलामी थी जिसकी वजह से लड़कियों को घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था और उनके जिम्मे चूल्हा, चौका, घर का इंतजाम और बच्चों को जन्म देना उसका पालन पोषण करना था, लेकिन अब समय बदल गया है। आज महिलायें हर दिशा में आगे आ रही है।

आज पूरे भारत में लड़कियों को शिक्षित बनाने और उन्हें बचाने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ''बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं'' नाम से लड़कियों के लिये एक योजना की शुरूआत भी की है। ''बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं'' एक ऐसी योजना है जिसका अर्थ होता है कन्या शिशु को बचाओ और इन्हें शिक्षित करो। आज के समय में सरकार ने भी हर नारी को शिक्षा मिले इसलिये निःशुल्क में शिक्षा की व्यवस्था की है। नारी को शिक्षा में बढ़ावा देने के लिये सरकार के तरफ से पढ़ने वाली हर नारी को पाठ्यपुस्तक, गणवेश स्कूल जाने के लिये साईकिल जैसी कई चीजें स्कूल की तरफ से दी जाती है और आज की नारी शिक्षा के दम पर आगे बढ़ चुकी है आज का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ नारी ने अपने कदम न बढ़ायें हों, यही देश का सच्चा विकास और प्रगति कही जा सकती है, इसलिये तो कहा जाता है कि ''नारी पढेगी, इतिहास गढ़ेगी''।

रंजीत कुमार सिंह
एम.एड.

पैसे की अजब कहानी

है लोभ बढ़ गया दुनिया में,
मैं जो बात करूं नादानी है।
पागल कर दे इंसान को जो,
पैसे की अजब कहानी हैं।
जहां पहले रूतबा ज्ञान का था,
प्रश्न आत्मसम्मान का था।
इज्जत इंसान की होती थी,
राज धर्म ईमान का था।
आज की पीढ़ि इन सब से,
एक दम ही अनजानी है।
पागल कर दे इंसान को जो,
पैसे की गजब कहानी है।
पैसा है तो सब कुछ है
ये बात सिखाई जाती है।
दूर करे इंसान से जो,
वे किताब पढ़ाई जाती है।
है रिश्तेदारी पैसे की,
प्यार कहां रूहानी है।
पागल कर दे इंसान को जो,
पैसे की अजब कहानी है।
गरीब को मिलता न्याय कहां,
कानून तो अभी अंधा है।
पैसे से मिलता न्याय यहां,
जुर्म बन गया धंधा है।
अन्याय देख कर खामोश हैं सब,
खून बन गया पानी है।
पागल कर दे इंसान को जो,
पैसे की अजब कहानी है।
घर बड़े और दिल अब छोटे हैं,
इंसान नियत के खोटे हैं।
भ्रष्ट हो रहे अब सब,
नौकरियों के कोटे हैं।
हो कैसे उन्नति देश की,
सब के मन में बेईमानी है।
पागल कर दे इंसान को जो,
पैसे की अजब कहानी है।

बुद्धि

पशुओं की तुलना में मनुष्य को कई ज्ञानात्मक योग्यताओं से सम्पन्न माना जाता है जो उसे विवेकशील प्राणी बनाती है। वह तर्क कर सकता है, भेद कर सकता है, समझ सकता है और नई स्थिति का सामना भी कर सकता है। निश्चित रूप से वह पशुओं से श्रेष्ठ है, परन्तु सभी मनुष्य एक जैसे नहीं होते। व्यापक रूप से व्यक्तिगत विभिन्नताएं पाई जाती है। एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों में आसानी से ये विभिन्नताएं देख सकता है। कई विद्यार्थी बहुत जल्दी सीखते हैं और कई विद्यार्थी बहुत देर बाद सीखते हैं। कई विद्यार्थी तो एक बार देखकर ही उपकरणों का प्रयोग करने लगते हैं, परन्तु कई विद्यार्थी बार–बार देखने पर एवं व्यक्तिगत रूप से निर्देश प्राप्त करने पर भी उनका अच्छी तरह से प्रयोग नहीं कर सकते।

वे कौन से कारण हैं? जिनसे एक व्यक्ति दूसरे की अपेक्षा किसी विशिष्ट स्थिति के प्रति अधिक प्रभावशील अनुक्रिया करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रूचि, अभिवृत्ति, प्राप्त ज्ञान एवं कौशल का सफलता प्राप्ति में महत्वपूर्ण स्थान होता है, परन्तु फिर भी कोई ऐसी चीज अवश्य है जो इन विविध विभिन्नताओं का कारण है। मनोविज्ञान में इसे 'बुद्धि' कहा जाता है। प्राचीन भारत में महान ऋषि इसे 'विवेक' कहते थे।

बुद्धि को व्यक्ति विशेष की समग्र मानसिक क्षमता से युक्त एक ऐसी मानस ऊर्जा के रूप में जाना जा सकता है जो उसे अपने वातावरण के साथ पटरी बिठाने तथा नवीन परिस्थितियों का सामना करने में जितना संभव हो प्रभावपूर्ण ढंग से सहायता कर सके। बुद्धि की प्रकृति के बारे में मुख्यतः जो बातें कही जा सकती हैं, वे हैं –

1. बुद्धि का वितरण जनसंख्या में सामान्य वक्र वितरण के नियम का पालन करना है।

2. इसे वंशक्रम और वातावरण की संयुक्त उपज माना जाता है।

3. जाति, धर्म, लिंग, रंग रूप, संस्कृति आदि विभिन्नताएं बौद्धिक विभिन्नताओं का कारण नहीं बनती।

बुद्धि के सिद्धांत, बुद्धि की संरचना यानि बुद्धि में निहित तत्वों अथवा कारकों के बारे में बताते हैं। जैसे बुद्धि का एक कारक सिद्धांत यह बताता है कि व्यक्ति विशेष की बुद्धि में केवल एक ही कारक अथवा तत्व होता है जिसे बौद्धिक क्षमता का नाम दिया जा सकता है। सभी बौद्धिक क्रियाओं को सम्पन्न करने में यही एक कारक या तत्व हर समय उपस्थित रहता है। इसके ठीक विपरीत बुद्धि का बहुकारक सिद्धांत यह बताता है कि बुद्धि एक नहीं अनेक तत्वों से मिलकर बनी है और प्रत्येक तत्व में कोई सूक्ष्म योग्यता निहित होती है जिनकी मदद से व्यक्ति विभिन्न प्रकार के विशिष्ट एवं सूक्ष्म कार्यों को संपादित कर सकते हैं।

स्पीयरमैन ने बुद्धि के 'द्विकारक सिद्धांत' का प्रतिपादन किया है। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें दो तत्वों का समावेश होता है– सामान्य व विशिष्ट बुद्धि। सामान्य बुद्धि के द्वारा व्यक्ति सामान्य कार्यों को सम्पादित करता है जबकि विशिष्ट बुद्धि का प्रयोग विशिष्ट कार्यों को करने के लिए किया जाता है। इस तरह से किसी एक मानसिक कार्य को करने हेतु सामान्य बुद्धि तथा विशिष्ट बुद्धि से युक्त दोनों ही प्रकार के तत्वों या कारकों की आवश्यकता पड़ती है।

समूह तत्व सिद्धांत के अनुसार बौद्धिक कार्यों को कुछ विशिष्ट समूहों में बांटा जा सकता है और इन विशिष्ट समूहों के अंतर्गत शामिल बौद्धिक कार्यों को करने हेतु अलग–अलग प्रकार की बुद्धि की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार से थर्सटन, थॉमसन, बर्नन तथा गिलफर्ड मनोवैज्ञानिकों ने भी बुद्धि से सम्बन्धित सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ''बुद्धि में व्यक्ति की वे मानसिक एवं ज्ञानात्मक योग्यताएं सम्मिलित हैं जो उसे जीवन की वास्तविक समस्याओं को सुलझाने में सहायता देती हैं और उसके आनन्दपूर्ण एवं संतुष्ट जीवन यापन में सहायक होती है।''

संदर्भ सूची :

1. Binnet, A and Simon T : The Development of Intelligence in Children, Baltimour : Willams & Wilkin's 1916.
2. Crow, L.D. and Crow, Alice : Educational Psychology, New Delhi: Eurasia Publishing House, 1973.

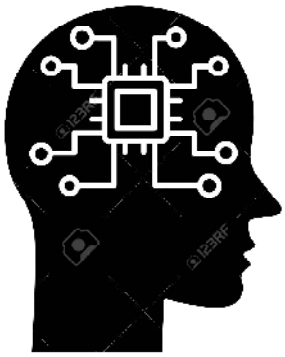

आरती निगम

एम.एड.

माता - पिता

माँ संवेदना है, भावना है, अहसास है,
माँ जीवन के फूल में, खूशबू का वास है।
पिता जीवन हैं, संबल हैं शक्ति हैं,
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है।।

माँ रोते हुए बच्चों का खुशनुमा पालना है,
माँ मरूस्थल में नदी या मीठा सा झरना है।
पिता अंगुली पकड़े बच्चे का सहारा है,
पिता कभी कुछ मीठा तो कभी कुछ खरा है।।

माँ लोरी, गीत है, प्यारी–सी थाप है,
माँ पूजा की थाली में मंत्रों का जाप है।
पिता पालन–पोषण है, परिवार का अनुशासन है,
पिता भय से चलने वाले प्रेम का प्रशासन है।।

माँ आँखों का सिसकता हुआ किनारा है,
माँ गालों पर पप्पी है, ममता की धारा है।
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है,
छोटे से परिन्दे का बड़ा आसमान है।।

माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है,
माँ फूँक से ठण्डा किया कलेवा है।
पिता अप्रदर्शित, अनन्त प्यार है,
पिता है तो बच्चों को इंतजार है।।

माँ कलम है, दवात है, स्याही है,
माँ परमात्मा की स्वयं एक गवाही है।
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने है,
पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने है।।

माँ अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है,
माँ जिन्दगी के मोहल्ले में आत्मा का भवन है।
पिता से ही परिवार में प्रतिपल राग है,
पिता से ही माँ की बिन्दी और सुहाग है।।

माँ चूड़ी वाले हाथों के, मजबूत कंधों का नाम है,
माँ काशी है, काबा है, और चारों धाम है।
पिता परमात्मा की जगत के प्रति आशक्ति है,
पिता गृहस्थ आश्रम में उच्च स्थिति की भक्ति है।।

माँ चिंता है, याद है, हिचकी है,
माँ बच्चों की चोट से सिसकी है।
पिता अपनी इच्छाओं का हनन और परिवार की पूर्ति है,
पिता रक्त में दिये हुए संस्कारों की मूर्ति है।।

माँ चूल्हा, धूआँ, रोटी और हाथों का छाना है,
माँ जीवन की कड़वाहट में अमृत का प्याला है।
पिता एक जीवन को जीवन दान है,
पिता दुनिया दिखाने अहसास है।।

माँ पृथ्वी है, जगत है, धूरी है,
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है।
पिता सुरक्षा है सिर पर हाथ है,
अगर पिता नहीं तो बचपन अनाथ है।।

माँ का महत्व इस दुनिया में कम हो नहीं सकता,
माँ जैसा दुनिया में कुछ हो नहीं सकता।
पिता से बड़ा अपना नाम करो,
क्योंकि माँ–बाप की कमी कोई पाट नहीं सकता।।

ईश्वर भी इनके आशीषों को काट नहीं सकता
दुनिया में किसी भी देवता का स्थान दूजा है।
माँ–बाप की सेवा सबसे बड़ी पूजा है।।

विश्व में किसी भी तीर्थ की यात्रा सब व्यर्थ है,
यदि बेटे के होते हुए माँ–बाप असमर्थ होते हैं।
वो खुशनसीब होते हैं, माँ–बाप जिनके साथ होते है,
क्योकि माँ–बाप के आशीषों के हजारों हाथ होते हैं।।

मीता नेताम
बी.एड.

.....

फूल कभी दोबारा नही खिलते,
जनम कभी दोबारा नही मिलते।
मिलते है लोग हजारों मगर,
हजारों गलतियाँ माफ करने वाले माँ–बाप नही मिलते।।

असली वारिस

एक इलाके में एक भले आदमी का देहावसान हो गया लोग अर्थी ले जाने को तैयार हुए और जब उठाकर शमशान ले जाने लगे तो एक आदमी आगे आया और अर्थी का एक पाव पकड़ लिया और बोला मरने वाले को मेरे 15 लाख देने है, पहले मुझे पैसे दो फिर उसको जाने दूंगा। अब तमाम लोग खड़े तमाशा देख रहे हैं, बेटों ने कहा के मरने वाले ने कोई ऐसी बात नहीं की कि वह कर्जदार है इसलिए हम नहीं दे सकते। मृतक के भाइयों ने कहा अगर बेटे जिम्मेदार नहीं हैं, तो हम क्यों दे। अब सारे खड़े हैं और उसने अर्थी पकड़ी हुई है, जब काफी देर हो गई तो बात घर की औरतों तक भी पहुंच गई। मरने वाले की एकलौती बेटी ने जब बात सुनी तो फौरन अपना सारा जेवर उतारा और अपनी सारी नकद रकम जमा करके उस आदमी के लिए भिजवा दी और कहा कि भगवान के लिए ये रकम और जेवर बेच के उसकी रकम रखो और मेरे पिताजी की अंतिम यात्रा को न रोको। मैं मरने से पहले सारा कर्ज अदा कर दूंगी और बाकी रकम का बन्दोबस्त कर दूंगी। अब वह अर्थी पकड़ने वाला शख्स खड़ा हुआ और सारे लोगों से मुखातिब होकर बोला– असल बात मैनें मरने वाले से 15 लाख लेना नहीं बल्कि देना है और उसके किसी वारिस को मैं जानता नहीं था, तो मैंने ये खेल किया। अब मुझे पता चल चुका है कि उसकी वारिस एक बेटी है और उसका कोई बेटा या भाई नहीं है।

नम्रता कंवर
डी.एल.एड

.....

बेटी होती है माँ बाप की शान
मत करो तुम दहेज से इनका अपमान।
कर लो सब लोग विचार, शिक्षा है बेटी का मुख्य अधिकार।।

परिचारिका (नर्स)

देखभाल को सदा मरीजों के, घर–घर तक जाती हैं।
फ्लोरेंस की पावन, बेटी नर्सिंग कहलाती।।

उपयोग सदा ही करती है, वह शारीरिक विज्ञान का।
देखभाल में ध्यान रखे वह, रोगी के सम्मान का।।

कितनी मेहनत संघर्षों से, एक नर्स बन पाती हैं।
फ्लोरेंस कि वह पावन, बेटी नर्सिंग कहलाती है।।

सदा बचाती हैं रोगी को, दुख–दर्दों, बीमारी से।
भेदभाव को नहीं करे वह, नर रोगी और नारी से।।

देख बुलंदी को नर्सों की, बीमारी डर जाती हैं।
फ्लोरेंस कि वह पावन, बेटी नर्सिंग कहलाती हैं।।

देती शिक्षा और सुरक्षा, बीमारी से बचने की।
कला नर्स को आती हैं, रोगी का जीवन रचने की।।

असहाय मरीजों की केवल, परिचायक ही तो साथी हैं।
फ्लोरेंस कि वह पावन, बेटी नर्सिंग कहलाती हैं।।

देखभाल का जिसके अंदर, एक अनोखा ज्ञान है।
बीमारों के लिए नर्स तो, धरती पर भगवान है।।

दीपक है यदि अस्पताल तो, नर्स ही उसकी बाती हैं।
फ्लोरेंस कि वह पावन, बेटी नर्सिंग कहलाती हैं।।

रूबी हिरवानी

उन्नत भारत, लाचार सिस्टम

हमारा भारत महान था, महान है और महान रहेगा। इस बात पर कोई शक नहीं है कि हम महान देश के नागरिक हैं और हमें इस देश में जन्म लेने पर गर्व है। यह बात अब धीरे–धीरे विलुप्त होते नजर आ रही है। हम बात करते हैं कुछ ऐसे सिस्टम की जो आजाद देश को फिर से गुलामी की ओर ढकेलते चले जा रही है। जहां हम इस देश के अनेक प्रक्रियाओं पर गर्व करते हैं वहीं कुछ ऐसे क्रियाकलापों के चलते हमें शर्मिंदा भी होना पड़ रहा है। कहते हैं जहां अच्छाई होती है वहां कुछ बुराईयां भी होती है। तो आईये हम बात करें कुछ ऐसे कारण, लक्षण व सुझाव की जिससे इस देश की गरिमा को कोई आंच न आए।

1. भारत एक कृषि प्रधान देश– *आज कृषकों की ऐसी दशा है जिससे हमें कृषि प्रधान देश कहलाने में भी शर्मिंदगी लगती है। भारत में कृषि एवं कृषकों के लिए अनेक योजनाएं संचालित है। हम बात इन योजनाओं के बारे में नहीं करेंगे, बल्कि सीधे उनके बारे में करेंगे जिसके कारण इस देश की कृषि से प्रमुखता घटती जा रही है। हमारे देश में कृषकों की कोई कमी नहीं है पर इस बात से भी हम परे नहीं है कि उनके अनुपात में अब कमियां आने लगी हैं। किसी भी तरह से एक दूसरे से आगे निकलने के लालच ने अब कृषि को पीछे छोड़ दिया है। महंगाई के कारण कृषक अपना जीवन यापन करने में अक्षम है। कृषि से समस्त जीवन दायिनी सामग्रियां व साधन जो एक मनुष्य की जरूरत है उसे प्राप्त करना धीरे–धीरे कठिन होता जा रहा है। इस कारण वे अब किसी और राह पर निकल पड़ा है। आज हमारे पास खेत तो है लेकिन उस खेत पर कार्य करने के लिए कुशल श्रमिक नहीं।*

2. बेरोजगारी एक प्रमुख समस्या– *युवा वर्ग की सबसे बड़ी समस्या है बेरोजगारी।*

यह बात भी सच है कि अधिक जनसंख्या होने के कारण यह समस्या अधिक है किंतु यहां कुछ ऐसे सिस्टम भी है जिसकी वजह से यह समस्या अपने चरम पर है। जब कोई शिक्षित युवा अपने जीवन यापन करने के लिए कोई धंधा या कार्य करता है वह निश्चित नहीं होता कि उस पर वह कितना कमाता है महंगाई के चलते वह उस पर अपना दिनचर्या नहीं चला पाता। कुछ तो ऐसे युवा भी है जो दूसरे को अधिक कमाता देख कोई निम्न स्तर का कार्य करना ही नहीं चाहता वह उससे आगे निकलने की चाह में कोई बड़ा रोजगार ढूंढते समय गवां देता है। एक कारण यह भी है कि शासकीय नौकरी में अवकाश के साथ–साथ वेतन भी अच्छी होती है और निजी धंधे में कोई अवकाश करने से उस दिन का कोई रकम नहीं मिलता परंतु शासकीय नौकरी में प्रत्येक दिन का वेतन मिलता है, इस कारण भी लोग सरकारी नौकरी की चाह में कोई अन्य कार्य नहीं कर पाता।

सबसे दुर्भाग्य का विषय तो यह है कि आप एक तरफ निजी कार्य (धंधा) व कृषि करने वाले व्यक्ति को रखे और दूसरी तरफ शासकीय नौकरी करने वाले को रखें तो दोनों में शासकीय नौकरी वाले को ही चुना जाता है। क्योंकि वह पूर्ण रूप से स्थायी होता है किसी तरह का ऋण भी उन्हें आसानी से प्राप्त हो जाता है। शिक्षित बेरोजगारी भत्ता कुछ वर्ष सरकार ने दिया अब वह भी विलुप्त हो गया। सरकार गांव में तो बेरोजगारों के लिए अनेक योजनाओं को संचालित करती है तो क्या सिर्फ गांव में ही गरीब, बेरोजगार होते हैं शहर में क्या कोई गरीब व बेरोजगार नहीं।

3. वर्तमान आहार से घटती जीवनी–*सभी जानते है कि दिनों–दिन मानव अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह होते जा रहे हैं। अधिक लाभ की चाह में अपने जीवन के साथ बहुत भयावह खिलवाड़ किया जा रहा है। कहते हैं मानव शरीर किस्मत वालों को नसीब होता है किंतु उसका सदुपयोग करने वाले लोग घटते क्रम में है। धन–संपत्ति की लालच में आज की पीढ़ि अपने पेट के साथ ही खिलवाड़ कर रहा है। आज हम जो भी भोजन चाहे फल, सब्जी, चावल, दाल, गेहूं व अनेक खाद्य सामग्रियां इस्तेमाल करते हैं सब में इतना ज्यादा रसायनिक पदार्थ व खाद उपयोग किया जा रहा है जिससे मनुष्य का शरीर समय से पहले ही अत्यधिक ऊर्जावान हो जाता है इस वजह से वह बहुत जल्दी ही अग्रेषित व उत्तेजित हो जाता है। जिस तरह अधिक खाद का प्रयोग करने पर पेड़–पौधे व खेत–खलिहान जल्दी ही बढ़ जाता है उसी तरह आज जो भोजन हमें प्राप्त हो रहा है उससे हमारा शरीर उस भोजन में मिले रसायनिक खाद जो की एक धीमा जहर है उसे प्राप्त कर रहा है। आज हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता पूर्व की अपेक्षा बहुत ही कम हो गया है। कोई भी बीमारी से हमारा शरीर लड़ने में अब अक्षम होता जा रहा है, जो बीमारी शरीर को 50 से 60 वर्ष की उम्र के बाद लगते थे वह अब 30 वर्ष व उससे भी कम हो चुका है। हार्ट अटैक, ब्लड प्रेशर, डायबीटिज, लकवा, वात रोग आदि की समस्या भी वर्तमान आहार के कारण चरम पर है।*

4. सोने की चिड़िया– *आप सब जानते हैं कि भारत देश पूर्व में इतना संपन्न हुआ करता था जहां अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ, उर्वरक, प्राकृतिक संपदा इस भारत भूमि की पहचान हुआ करती थी, फिर भी आज इस देश में भूखमरी, बेरोजगारी, गरीबी व अशिक्षित क्षेत्र व्याप्त है। जो परिवार गरीब है वह और गरीब होता जा रहा है और जो अमीर है वह और अमीर होता जा रहा है। जिस व्यक्ति को अपने परिवार के लिए रोजगार की जरूरत है उन्हें कोई भी नौकरी नहीं मिलती और जिनके घर में पहले ही नौकरी वाले हैं वहां आसानी से दूसरे को भी नौकरी मिल जाती है। जब तक सरकार इस बात की निरीक्षण नहीं कर लेती की किस परिवार को नौकरी की जरूरत है और किसे नहीं, तब तक इस देश की समस्या का समाधान नहीं हो सकता। भारत देश को सोने की चिड़िया कहा जाता है पर लगता है कि वही चिड़िया सोना लेकर कही उड़ गयी।*

5. शासकीय प्रोडक्ट्स कंपनियों का निर्माण– *मानव जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए अनेक रोजमर्रा के सामग्री की आवश्यकता होती है। जो कि अधिकतर प्राइवेट कंपनियां ही बनाती हैं। सरकार प्रोडक्ट्स कंपनियों का निर्माण कर वहां श्रमिकों को नौकरी दे तो किसी भी जिले में कोई भी एक सामग्री का भी अगर उत्पादन व निर्माण कार्य प्रारंभ करें तो बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। क्या शासकीय विभागों में ही नौकरी हो सकती है ? सामग्री कंपनियों का निर्माण भारत सरकार नहीं कर सकती। आईए एक नजर इस सोच पर भी डाले–अगर तेल, सब्जी, दाल, नमक, साबुन, फर्नीचर, लोहे के सामान, ईंट, सीमेंट, टूथ पेस्ट, वस्त्र, पेपर व अन्य पार्ट्स इस तरह की सामग्रियों का निर्माण अगर सरकार कंपनी निर्माण कर अपने कंपनियों के माध्यम से प्रदान करें तब भी देश की बहुत सी समस्याएं हल हो सकती है। आईए उन्नत भारत का सपना साकार करें....*

जय हिन्द

नरेश सिन्हा

शिक्षा से ना सीख पाए

शिक्षा से हम बने या हमने शिक्षा बनाए,
हे प्रभु! यह शिक्षा का कैसा कलयुग आप ले आए।

हमने राम पढ़े रहीम पढ़े,
फिर भी खासा सीख ना पाए।
तभी तो तेरा मेरा कहकर हम पढ़े लिखे ने ही,
शिक्षा की धज्जियाँ उड़ाए।
हे प्रभु! ये शिक्षा का कैसा कलयुग आप ले आए।

हमने टैगोर पढ़े, स्वामी भी पढ़े,
फिर भी नैतिकता ना पढ़ पाए।
हे प्रभु! ये शिक्षा का कैसा कलयुग आप ले आए।

हमने गांधी पढ़े पटेल पढ़े,
फिर भी राष्ट्रीयता की भाव ना जगा पाए।
तभी तो पढ़े–लिखे अपने में खुश,
और अनपढ़ है नेता नजर आए।
हे प्रभु! ये शिक्षा का कैसा कल युग आप ले आए।

राजू वर्मा
बी.एड.

बड़े बुजुर्गो का यही है कहना, शिक्षा से तुम दूर न रहना।
रोटी कपड़ा और मकान, इसके बाद शिक्षा से ही बनेगा देश महान।

शिक्षा में मूल्य का अभाव "एक समस्या"

मूल्य जीवन का यह शाश्वत गुण है जिससे आंशिक आचरण से भी व्यक्ति मूल्यवान हो जाता है। जीवन के विविध पहलुओं में मूल्य की मिलावट उस नमक की भांति है जिसकी अनुपस्थिति से सम्पूर्ण जीवन का रस स्वादहीन हो जाता है। आज के सामाजिक परिवेश में माता–पिता का तिरस्कार, शिक्षकों का अनादर, भाई–भाई में द्वंद गैर सामाजिक कृत्य, दुष्कर्म, धोखाधड़ी, लूट, फरेब, पति–पत्नी में अस्थिर संबंध एवं भ्रष्टाचार जैसे अनैतिक कार्य के पीछे मूल्य का अभाव होना सबसे बड़ा कारण है। मूल्य की चर्चा में यह भी समझना आवश्यक है कि मूल्य क्या है? नीतिशास्त्र के अनुसार मूल्य किसी चीज या क्रिया के महत्व को दर्शाता है एवं साथ ही इसका लक्ष्य यह निर्धारित करना होता है कि कौन सा कार्य श्रेष्ठ है, करने हेतु है या कौन सा तरीका श्रेष्ठ है जीने हेतु कौन–सा आचाण श्रेष्ठ है। मूल्य कार्य एवं कार्य के उद्देश्य दोनों को परिभाषित करता है। भारतीय वाड़गमय, वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, श्रीमदभगवत गीता आदि ग्रंथों में मूल्य को श्रेष्ठ कर्म की संज्ञा दी है।

"श्रेयान स्वधर्मो विगुणः पर धर्मात्स्वनुष्ठितता।
स्वधर्मे निधनम श्रेयः परधर्मो भयवहः।।"

सामान्य रूप से शुभ, सत्य, शिव, सुन्दर और पवित्रता का अंतवर्ती स्वरूप ही मूल्य की अवधारणा है। सम्पूर्ण चरित्र के संगठित सांमजस्य के प्रतिरूप में मूल्य व्यक्ति के सदव्यक्तित्व का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है साथ ही मूल्य आधारित चरित्र किसी भी काल या परिस्थिति की स्वस्थ सामाजिक के लिये प्राथमिक आवश्यकता के रूप में भी जाना जाता है। किसी विद्वान का कथन है–

"यदि आपका चरित्र अच्छा है तो आपके परिवार में शांति रहेगी।
यदि आपके परिवार में शांति रहेगी तो समाज में शांति रहेगी।
यदि आपके समाज में शांति है तो राष्ट्र में शांति रहेगी।"

जीवन में सामाजिक मूल्य पारिवारिक मूल्य, शैक्षिक मूल्य एवं जीवन मूल्य होने से व्यक्ति मानवीय मूल्य को प्राप्त करता है। प्राचीन काल से ही मूल्य शिक्षार्थियों के शिक्षा ग्रहण की प्रमुख पात्रता रहा है। इसी नैतिक मूल्य से वशीभूत होकर एकलव्य ने द्रोणाचार्य को गुरू दक्षिणा में अपने गुरू की इच्छा का सम्मान करते हुये अपना दाहिना अंगूठा अर्पित किया था। कर्ण ने अपने गुरू की निद्रा को खंडित नहीं होने दिया। ऐसा इसलिये था कि शिष्यों को अपने नैतिक धर्म कि समझ थी। यही नैतिक समझ आगे चलकर व्यक्ति के कार्यों में नैतिकता का संचार करती थी जिसके फलस्वरूप जो भी कार्य होता था वह समाज हिताय एवं समाज सुखाय से प्रतिलक्षित होता था।

वर्तमान समय में यूं तो शिक्षा कि मांग काफी बढ़ी है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक लेने के लिये छात्रों में जिज्ञासाओं का अंबार देखा जा रहा है, किन्तु इन शिक्षाओं के पाठ्यक्रमों में मूल्य चावल में पड़े कंकड़ की भांति दिखाई नहीं देते।

जिसके फलस्वरूप वे इंजीनियर तो बन रहे हैं परंतु बड़ी–बड़ी इमारतें एवं पुल कुछ ही महीने में अचानक से ध्वस्त हो जाते है। इसके अलावा वे डॉक्टर भी बन रहे हैं, मगर वहां भी अपना ज्यादा फायदा हासिल करने के लिये निरीह मरीजों के शरीर से किडनी आदि निकालकर बेच देते हैं। क्षेत्र कोई भी हो, लेकिन सभी जगह अमूमन एक ही जैसी स्वार्थ संलिप्तता दिखाई दे जाती है। विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या करें ऐसी नैतिकता विहीन शिक्षा का जो समाज को सुविधा पहुंचाने कि बजाय उसे नष्ट करने पर उतारू है। अक्सर हम उनकी गलतियों को व्यक्ति की गलती बता कर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं इस चिंताजनक परिणाम के पीछे नैतिक मूल्यों का पतन ही मूल कारण है।

ऐसा नहीं है कि समाज को ईमानदार एवं नैतिक समाज नही बनाया जा सकता है, लेकिन उसके लिये सबसे पहले शिक्षकों को उत्तरदायी होने की मुखरता दिखानी होगी, साथ ही हमारी सरकारों को भी नैतिक शिक्षा के पक्ष में खड़े होना होगा और नमक की ही अनैतिकता एवं भ्रष्ट आचरणों का अंधकार हमेशा के लिये मिट जाये।

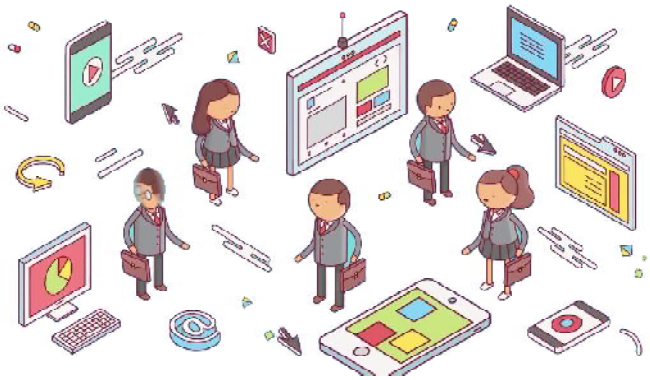

रिमझिम कुमारी
एम.एड.

.....

पढ़ना कभी भी बंद न करें, क्योंकि ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती। धन आपसे कोई भी छीन सकता है, लेकिन ज्ञान आपके पास हमेशा बना रहेगा।

मुझे गर्व है कि मैं बेटी हूँ

तोड़ के हर पिंजरा,
जाने कब मैं उड़ जाउंगी।

चाहे लाख बिछा लो बंदिशे,
फिर भी दूर आसमान, मैं अपनी जगह बनाउंगी मैं ''

हां गर्व है मुझे मैं बेटी हूं!

भले ही परम्परावादी जंजीरों से बांधे हैं,
दुनिया के लोगों ने पैर मेरे।

फिर भी उस जंजीरों को तोड़ जाउंगी,
मैं किसी से कम नहीं सारी दुनिया को दिखाउंगी

हाँ गर्व है मुझे मैं बेटी हूँ!

एक दिन जरूर आयेगा जब मैं अपना,
सपना सच कर जाउंगी।।
अपनी एक नयी पहचान बनाउंगी!

रोहिणी वर्मा

.....

बेटिया तो है ईश्वर का उपहार, मत छीनो इनके जीने का अधिकार।
बेटी बचाओ बेटी पढाओं, बेटी को पढ़ाकर एक सभ्य समाज बनाओ।

मॉब लिंचिंग/भीड़ द्वारा हिंसा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समूह में रहना मनुष्य की प्रमुख विशेषता रही है, जो उसे सुरक्षा का एहसास कराती है लेकिन आज जिस तरह यह समूह एवं उन्मादी भीड़ में तब्दील होते जा रहा है वह चिंता का विषय है, जिसके कारण हमारे भीतर एक डर की भावना बैठते जा रही है और आज के सुसंस्कृत समाज का आदिम रूप उजागर हो रहा है। हाल के दिनों में चाहे वह बच्चा चोरी की अफवाह हो या गौ–मांस का विक्रय की अफवाह या वोट बैंक के लिये प्रायोजित हिंसा या धर्म के नाम पर करवायी गई हिंसा की घटनाएं लगातार सामने आते रही हैं, जिसके माध्यम से तथा कथित आरोपियों को बगैर जांच पड़ताल या पुष्टि के मौत के घाट उतार दिया जाता है।

यह केवल न्याय व्यवस्था के लिए चुनौती नहीं है, अपितु व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक स्तर पर हो रहे बदलावों को उजागर करता है इसके कारणों पर गौर करे तो इसका पहला कारण है लोगों में बढ़ती उग्रता तथा न्याय व्यवस्था के लिए लोगों की आस्था में कमी किसी वर्ग विशेष के प्रति घृणा इसके प्रमुख कारण हैं। विशेषकर राजनीतिक दलों द्वारा भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता इसके कानून व्यवस्था की समस्या के तौर पर नहीं बल्कि समाज में बनी विसंगतियों के समाधान द्वारा ही सुलझाया जा सकता है। अतः इसमें संलिप्त लोगों को कठोर सजा व इसके प्रेरकों पर भी काबू पाने की आवश्यकता है।

निरंजना साहू
एम.एड.

परीक्षा

आयी परीक्षा सिर पर देखो,
मुँह से निकला हाय राम,
बने किताबी कीड़ा हैं सब,
छोड़ के देखो सारे काम।

रिश्तेदारों को है चिंता,
हमसे ज्यादा खाय रही,
फेल हुई थी चुन्नी अपनी,
बता के बुआ आय रही,
बस उनके चक्कर में अब तो,
जीना हुआ अपना हराम,
बने किताबी कीड़ा हैं सब,
छोड़ के देखो सारे काम।

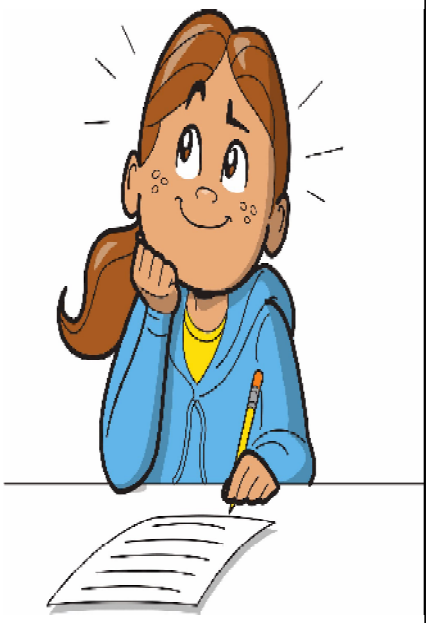

नींद न आती रातों को,
उल्लू बन–बन जाग रहे,
समझ न आये कौन दिशा में,
दिमाग के घोड़े दौड़ रहे,
सिर में ऐसी दर्द छिड़े है,
भगा सके न झंडू बाम,
बने किताबी कीड़ा हैं सब,
छोड़ के देखों सारे काम।

जादू–टोना, तंतर–मंतर,
काम न कुछ भी करता है,
इसके जाल में जो भी फसता,
वो जीता न मरता है,
मंदिर–मस्जिद जहाँ भी जाओ,
आता न मन को आराम,
बने किताबी कीड़ा है सब,
छोड़ के देखो सारे काम।

जान कौन वो इंसान था,
हमसे दुश्मनी जिसने निभायी,
जाने किस बदले की खातीर,
उसने फिर परीक्षा बनायी,
मिल जायें जो हमें कहीं वो,
कर दे उसका काम तमाम,
बने किताबी कीड़ा है सब,
छोड़ के देखो सारे काम।

चैन कहाँ मिल रहा किसी को,
किसे मिल रहा है विश्राम,
भागा–दौड़ी मची हुई है,
कुछ बैठे जपते हैं नाम,
बनेगा क्या अब लगी है चिंता,
सोचें बस यही सुबह और शाम,
बने किताबी कीड़ा है सब,
छोड़ के देखों सारे काम।।

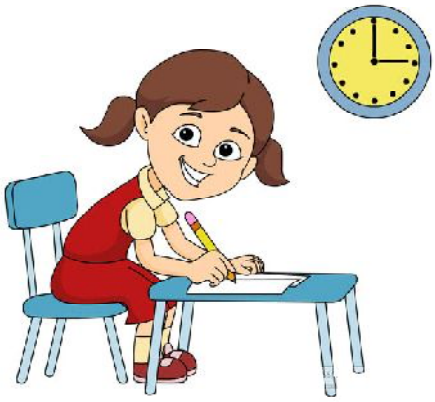

आकांक्षा तिर्की
बी.एड.

.....

यही जज्बा रहा तो मुश्किलों का हल भी निकलेगा
जमीं बंजर हुई तो क्या वहीं से जल भी निकलेगा।
ना हो मायूस ना घबरा अंधेरों से मेरे साथी
इन्हीं रातों के दामन से सुनहरा कल भी निकलेगा।।

आदिवासी भारत के अध्येता

जिस दिन बापू ने मुझे बेटा कहकर संबोधित किया, उसी पल से मैं अपने आपको भारतीय समझने लगा। यह मर्मस्पर्शी उद्‌गार सुविख्यात मानवशास्त्री पद्‌मभूषण डॉ. वेरियर एल्विन के है। यह युवा अंग्रेज गॉधी जी से इतना प्रभावित क्यों था, यह तथ्य जानने के लिये हमें उसके प्रारंभिक जीवन की उन घटनाओं का ध्यान होगा, जब वह ऑक्सफोर्ड में अपनी उच्च शिक्षा पूर्ण करने में व्यस्त था।

धर्मशास्त्र की शिक्षा पूर्ण करते–करते लगभग यह तय हो चुका था कि उन्हें भी अपनी पिता की तरह ही एक धर्मोपदेशक बनना है, किन्तु ऐसा हो ना सका। उनका एक मित्र गाँधी जी की विचारधारा से अत्यंत प्रभावित था और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति भी सहानुभूति रखता था। उस मित्र ने गाँधीवादी विचारधारा एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर के विश्व बंधुत्व की विचारधारा से उनका परिचय कराया यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि वेरियर की माँ के रिश्ते के अनेक सदस्य भारत में रह चुके थे तथा वेरियर की माता का जन्म भारत में ही हुआ था इसलिये भारत के प्रति झुकाव उसके मन में कहीं ना कहीं घर कर चुका था। बापू की विचारधारा से प्रभावित हुए बिना वे रह न सकें। उधर एक ओर जहाँ उनकी माता एक कट्‌टर धर्मपरायण महिला थी, तो दूसरी ओर उनके पिता अफ्रीका में मिशनरी कार्य करते थे। इस तरह बालक वेरियर को धार्मिक परिवेश बाल्यकाल से ही मिला था, जहाँ त्याग, प्रेम और भाईचारा जैसे मानवतावादी विचारधारा का वर्चस्व रहा। इसके अतिरिक्त प्रारंभ से एक और विशेष पाठ इन्हें पढ़ाया गया था, वह यह कि धन– दौलत, राजनैतिक सफलता आदि से कहीं ऊँचा स्थान मन और आत्मा की शुद्धि और आनंद का होता है। इन परिस्थितियों में वेरियर का गाँधी जी की ओर आकर्षण स्वाभाविक ही लगता है। इसके अतिरिक्त शिक्षक फादर ग्रीन ने भी वेरियर से कहा "अगर तुम ऑक्सफोर्ड मे ही रहते हो तो तुम्हारे सम्मुख एक स्वाभाविक मौन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है तुम्हें यहाँ से बाहर निकलना ही होगा जहॉ तुम गरीबों के बीच रह सकोगे ।

वेरियर के परिवार के कई सदस्यों ने अनेक वर्षों तक गुलाम भारत में अंग्रेज शासन का प्रतिनिधी बन कर कार्य किया था, उन्होनें किसी ना किसी रूप में यहाँ से कुछ प्राप्त ही किया था, इसीलिए उसी परिवार के किसी सदस्य द्वारा भारत से कुछ लेने नहीं, वरन् देने का समय आ गया है ऐसी इच्छा रखने लगा था।

28 नवंबर 1927 को 25 वर्ष का युवा वेरियर "ख्रीस्त सेवा संघ" का सदस्य बनकर उसके मुख्यालय पूना पहुँचा। यहाँ पहुँचने के कुछ दिनों बाद ही ऐसी घटना घटी जो वेरियर का इंतजार कर रही थी। यह थी जनवरी 1928 में बापू के साबरमती आश्रम में आयोजित अंतर धार्मिक सम्मेलन की भागीदारी। इस घटना ने युवा वेरियर को उस असाधारण व्यक्ति के सम्मुख ला खड़ा किया जिसके बारे मे वे अब तक सुनते और पढ़ते आए थे एवं जिनकी विचार

धारा से वह अत्यंत प्रभावित थे। यह एक ऐसा अवसर था जिससे न केवल वेरियर के अगले 4–5 वर्षों के जीवनकाल का दिशा निर्धारण कर दिया, वरन उन मूल अवयवों से संपन्न कर दिया, जिनकी आवश्यकता हमारे देश के आदिवासियों के मध्य रहते हुए उसे एक सम्पूर्ण मानवशास्त्री के रूप में पड़नी थी। स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े रहने के कारण उस काल के देश के महत्वपूर्ण नेताओं से वेरियर के अच्छे संबंध बन गए। उस समय के सुविख्यात उद्योगपति सेठ जमनालाल बजाज की वेरियर के अच्छे मित्र बन गए। यहीं मित्रता वेरियर के जीवन के दूसरे अतिमहत्वपूर्ण अध्याय के प्रारंभिक विषम परिस्थितियों में बहुत लाभप्रद सिद्ध हुई, जब वेरियर अपने एक करीबी श्यामलाल हिवाले के साथ मिलकर उस समय के डिण्डोरी तहसील (जिला– मण्डला, मध्य भारत) के छोटे से ग्राम कुरंजिया में आदिवासियों के बीच बसने के लिए संघर्ष कर रहे थे। दिसंबर 1932 को वह ऐतिहासिक घड़ी आ गई जब इन दोनों ने मिलकर करंजिया गॉव में अपने कदम रखें। अगले बीस वर्षों तक इन दोनों ने मिलकर वह कार्य किया जो बहुत कम पढ़ने और सुनने में आता है। इस आदिवासी क्षेत्र को उन्होने ने अपना लिया इनके बीच रहते हुए उनके समाज का अंग बन गए। यहॉ रहते हुये वेरियर ने अनेक पुस्तकों की रचना की थी, जो मानव शास्त्र में उच्च स्थान रखती है। वेरियर ने अंत तक उनके जीवन की सारी सफलता का श्रेय उन आदिवासियों को दिया जिन्हें हम अनपढ़ और असभ्य समझते है। उनके मन में आदिवासियों के प्रति गहरी संवेदना थी। इसी कारण आज भी इस क्षेत्र के वासी बड़े भैय्या और छोटे भैय्या (वेरियर और षामराव) को इतने आदर और स्नेह से याद करते है। मन भर उठता है इन सबको देखकर और सुनकर, स्कूल, दवाखाना चलाना तो बड़ा कार्य है पर उससे भी कही ऊॅचा और साहसिक कार्य है आदिवासियों के मन में स्थान बनाना। उनके बीच रहते हुए अपनी व्यक्तिगत पहचान को मिटा देना, उनके भविष्य के लिए एक दृष्टि पैदा करना और उनके सादगीपूर्ण जीवन की यर्थाथता को विश्व के सम्मुख स्वीकारना।

आदिवासियों के लिए उनकी गहरी बौद्धिक और सामाजिक प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने सन् 1961 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। 1965 में उन्हें मरणोपरांत उनकी पुस्तक द ट्राईबल वर्ल्ड ऑफ वेरियर एल्विन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। यह भी एक उल्लेखनीय तथ्य है कि ऑक्सफोर्ड ने कही अपने

डॉ. योगेश पौनीकर,
प्राचार्य
अपोलो कॉलेज ऑफ फॉर्मेसी

आखिरी प्रयास

किसी गांव में एक व्यापारी रहता था उसकी भगवान से बहुत नाराजगी थी एक बार व्यापारी किसी दूसरे शहर से अपने घर लौट रहा था, बस से उतरकर वह पैदल अपने घर के रास्ते पर जा रहा था, तभी रास्ते में उसे एक बड़ा–सा चमकीला पत्थर दिखा उस पत्थर की ओर व्यापारी आकर्षित हो गया और उसने सोचा क्यों न इस पत्थर को अपने साथ ले जाऊँ इस खुबसूरत से पत्थर से अपने घर के लिए मूर्ति बनवाउंगा। व्यापारी ने पत्थर उठा लिया और शिल्पकार की दुकान में रूका, खुबसूरत–सी देवी की प्रतिमा बना दीजिए मूर्तिकार ने पत्थर को तरासने का काम किया। पत्थर को काटने में जूट गया। व्यापारी बार–बार प्रहार कर रहा था, परन्तु वह नाकामयाब रहा, पत्थर बहुत कठोर था और टूट नहीं रहा था। बहुत प्रयास के बाद भी उसी समय व्यापारी फिर आया मूर्तिकार के पास और मूर्ति के बारे में पूछा तो मूर्तिकार ने बताया कि मूर्ति नहीं बनी। व्यापारी ने पत्थर लेकर उस जगह से दूसरे मूर्तिकार के पास गया और मूर्ति बनाने के लिए बोला मूर्तिकार ने बनाना शुरू किया और पत्थर एक बार में ही कटने लगा और थोड़े देर में मूर्ति भी बन गई, क्योंकि पत्थर कमजोर हो चुका था। व्यापारी मन ही मन मूर्तिकार कि दशा सोचकर मुस्कुराया 99 प्रतिशत मेहनत उस मूर्तिकार ने की पर आखिर में उसने आखिरी प्रहार भी किया होता तो मूर्ति बन गई होती।

निष्कर्ष :– *बहुत से लोग जिन्हें लगता है कि कठिन प्रयासों से भी सफल नहीं हो पा रहे हैं लेकिन सच तो ये है कि वो आखिरी प्रयास से पहले ही थक जाते हैं प्रयास करते रहिए क्या पता आपका आखिरी प्रयास सफलता लाए।*

प्रिया सिंह

सैनिक पर कविताएँ

भले तन धूल धुसरित हो,
वो मन मैला नहीं होता।
वतन के वीर पूतों का,
कफन मैला नहीं होता।
यहां तो बागवां ही पर,
कतराते ही नजर आते,
सजग माली के रहने पर,
चमन मैला नहीं होता।
प्यार के राह के हर मोड़ पे,
खंजर खनकता है।
जिगर पाके मुहब्बत हो,
मिलन मैला नहीं होता।
खुद बारूद पर बैठा,
मुझे आंखे दिखाता है,
मिसिर विनोद छींटों से
गगन मैला नहीं होता।

अकलीमा
बी.एड.

.....

तूफानों से लड़ते है वो, आँधियों में उड़ते है,
देश की मिट्टी में अपना, अंग–अंग रंगते है।
धरती, जल, वायु भी जिनको प्रणाम करते है,
ओ भारत माँ के वीर सपूत, कहाँ किसी से डरते है।।

भारत में स्त्री शिक्षा

पौराणिक काल के भारत में महिलाओं के लिए शिक्षा का उचित प्रबंध था, परन्तु मध्यकालीन युग के आते–आते महिलाओं पर कई तरह की पाबंदियां लगा दी गई थी। हालांकि अगर हम आज की बात करें तो लोग महिलाओं की शिक्षा को लेकर बहुत जागरूक हो चुके हैं और ये अच्छी तरह समझते है कि बिना महिलाओं के शिक्षित हुए देश और समाज विकास नहीं कर सकता। यह तथ्य सत्य है कि महिला और पुरूष दोनों मिलकर ही देश को हर क्षेत्र में पूर्ण रूप से विकसित कर सकते हैं। महिलाओं को भी पुरूष की तरह शिक्षा सम्बन्धी गतिविधियों में बराबरी का मौका दिया जाना चाहिए। उन्हें शिक्षा से जुड़ी किसी भी तरह की कार्यवाही से दूर रखना क्रूरता के समान है। हमारे देश की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलायें करती हैं। अगर महिलायें अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाईं तो इसका मतलब है कि हमारे देश का विकास भी अधूरा है जो देश को पिछड़ेपन की ओर ले जायेगा। महिलाओं के शिक्षित होने से समाज और देश में विकास भी तेजी से हो पायेगा। महिलाओं के लिए शिक्षा के महत्व को व्यापक स्तर पर फैलाने के लिए पूरे देश में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। एक शिक्षित महिला ही अपने परिवार का तथा देश का विकास कर सकती है।

अंजली कुमारी
एम.एड.

संघर्ष - एक सफर

मैं अकेली चलती रही
न कोई मंजिल थी,
न कोई रास्ता था,
खुद अपनी मंजिल,
अपना रास्ता लिये,
मैं अकेली बढ़ती रही।

चारों ओर अँधेरा था,
न कोई सवेरा था,
अपने शब्दों का चिराग लिए,
मैं अकेली जलती रही।

दिन बीत गए,
मैं चलती रही,
हर शाम नयी सुबह की तलाश में,
सूरज ढलता रहा,
मैं अकेली चलती रही।

थम चूकी थी ..... न रो सकी,
बेचैनी में न सो सकी,
काँटो भरे उस बिस्तर पर,
मैं करवटें बदलती रही।
मैं अकेली चलती रही।

थकना, न था मुझको,
रूकना, ना था मुझको,
पसीने में माही मिला,
अपने माथे मलती रही।
मैं अकेली चलती रही।

मैं टिकी रही,
मैं डटी रही,
रास्ते की हर आँधी,
मुझसे टकराती रही,
धूप में चलने के बाद,
आखिर आया मेरा मौसम,
पतझड़ का वो मौसम,
सावन में बदलती रही
मैं अकेली चलती रही .....

अम्बिका
बी.एड.

समय बड़ा अनमोल

छात्र–जीवन एक ऐसा समय है जब आप स्वयं को भविष्य में मिलने वाली चुनौतियाँ हेतु तैयार कर सकते हैं। इस समय का ज्ञानार्जन इस समय पड़ी हुई अच्छी आदतें मेहनत करने की समर्थता आपके भविष्य निर्माण की रूपरेखा बनाते हैं। जीवन में सुनहरे भविष्य हेतु छात्र जीवन में संयम, संकल्प एवं कठिन होती मेहनत की आवश्यकता है। एक छात्र यदि यह समय व्यर्थ करता है तो फिर यह अपने जीवन में मौज–मस्ती की ना सोचें बल्कि सारा जीवन आटा–नमक का भाव पूछने में ही लगाना होगा।

समय के साथ बदलाव आवश्यक है या नहीं ?

मां–पिता की सलाह छात्रों को बहुत गलत लगती है। बात–बात पर बच्चों को दी जाने वाली सलाह, उन्हें डांटा जाना, उन पर पाबंदियां लगाना, अच्छा–बुरा समझना छात्रों को नहीं भाता है। छात्र मां–पिता को 'जनरेशन गैप' के कारण से गलत ठहराते हैं या पुरानी मान्यताओं के कारण गलत ठहराते हैं। प्रश्न सही या गलत का नहीं है, प्रश्न है, क्या आपके द्वारा छात्र–जीवन में किये जा रहे कार्य लक्ष्य प्राप्ति के अनुरूप है या नहीं ? कहीं ऐसा तो नहीं, जनरेसन गैप की दुहाई देकर आप लक्ष्य से भटक रहे हैं ? कहीं ऐसा तो नहीं नई पुरानी मान्यताओं का बहाना कर आप गलत मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं ?

दोबारा अवसर मिले ये जरूरी नहीं

सबसे ज्यादा प्रभावित करेगा आप यदि सही दिशा में अग्रसर हैं तो यह आपके हित में है और यदि आप गलत दिशा में पतन की ओर जा रहे हैं तो भी सबसे ज्यादा कष्ट आपके जीवन में ही आना है। अतः आपके जीवन को अच्छा बनाना है तो सही दिशा में कदम बढ़ाएं और आप स्वयं के हित में कार्य करें। छात्र–जीवन जैसा समय फिर कभी नहीं मिलेगा, तो मैं आप सभी से आशा करती हूं कि आप यह बहुमूल्य समय केवल और केवल अपने भविष्य को बनाने में लगाएंगे। इतना स्वतंत्र समय, जब आपको किसी प्रकार के सामाजिक बंधनों से सरोकार नहीं है, आर्थिक परेशानियों से कोई मतलब नहीं है। आपको हर तरह का संभव/सहयोग अभिभावक प्रदान करते हैं, फिर भी यदि आप स्वयं के हित में, सही मार्ग पर नहीं चल सकते तो फिर कब चलेंगें ?

अंजली कुमारी
एम.एड.

रिश्ते अनमोल होते है, उन्हे संभालकर रखना चाहिए

मैं रूठा तुम भी रूठ गये,
फिर मनाएगा कौन ??
आज दरार है, कल खाई होगा,
फिर भरेगा कौन ??
मैं भी चुप, तुम भी चुप,
इस चुप्पी को फिर तोड़ेगा कौन ??
छोटी बातें को दिल से लगा लोगे,
तो रिश्ता फिर निभाएगा कौन ??
दुखी मैं भी और तुम भी बिछड़कर,
सोचो फिर हाथ बढ़ाएगा कौन ??
ना मैं राजी ना तुम राजी,
फिर माफ करने का बड़प्पन निभाएगा कौन ??
डूब जाएगा यादों में दिल कभी,
फिर धैर्य बंधाएगा कौन ??
एक अहम मेरे, एक तेरे भीतर भी,
इस अहम को फिर हराएगा कौन ??
जिंदगी किसको मिली है सदा के लिए ??
फिर इन लम्हों में अकेला रह जाएगा कौन ??
मूंद ली दोनों में से अगर एक दिन एक ने आंखे,
तो कल इस बात पर पछताएगा कौन ??

आशा सिंह
बी.एड.

.....

करीब इतना रहों कि रिश्तों में प्यार रहे
दूर भी इतना रहे कि आने का इंतजार।
रखो उम्मीद रिश्तों के दरमियान इतनी
कि टूट जाये उम्मीद मगर रिश्तें बरकरार रहे।।

GST, वस्तु एवं सेवा कर

GST *का फूल फार्म इंग्लिश में* Goods and Services Tax *होता है, और हिन्दी में कहे तो फूल फार्म वस्तु एवं सेवा कर होता है। वस्तु एवं सेवा कर* (GST) *भारत सरकार के द्वारा शुरू की गई नया टैक्स सिस्टम है जिसमे पुराने सभी लगाये जाने वाले टैक्स को हटा कर सिर्फ एक टैक्स सिस्टम के रूप में जगह ले लिया है।* (GST) *वस्तु एवं सेवा कर एक ऐसी सेवाएं है, जिसमें एक कस्टमर अपनी लाइफ जीने के लिए बहुत सारी चीजें खरीदता है, और कई सेवाओं का इस्तेमाल करता है ये इन्ही दो चीजों पर आधारित है और कई सेवाओं का इस्तेमाल करता है, ये इन्हीं दो चीजों पर आधारित है और लगाया जाता है। इसके लागू होने के बाद से किसी भी सामान और सेवा पर टैक्स वही लगता है जहां वो बिकता है इसमें सभी प्रकार के टैक्स का भुगतान अलग–अलग न करके बल्कि एक साथ* GST *के रूप में कर का भुगतान किया जाता है, वस्तु एवं सेवा कर के 4 प्रकार है।*

1. CGST	-	Central Goods and Services Tax
2. SGST	-	State Goods and Services Tax
3. IGST	-	Integrated Goods and Services Tax
4. UGST/VTGST	-	Union Territory Goods and Services Tax

ये एक अप्रत्यक्ष कर प्रणाली है जिसे भारतीय सरकार और कई अर्थशास्त्री भारत की आजादी के बाद का सबसे बड़ा आर्थिक सुधार मानते हैं, इससे सेंट्रल और स्टेट गवर्नमेंट द्वारा लगाए जाने वाले अलग–अलग टैक्सेज को हटाकर पूरे देश के लिए एक ही अप्रत्यक्ष कर प्रणाली को लागू कर दिया है, इससे भारत को एक सिंगल मार्केट बनने में मदद मिलती है।

भूमिका ठाकुर
एम.एड.

गंगा मैली कर गए

वाह क्या लोग हैं? हम,
खुद को पवित्र कर गये,
पर गंगा मैली कर गये।

सरकार स्वच्छता भाषण में मर गये,
और जनता स्वच्छता भाषण सुनकर भी,
गंगा मैली कर गये।

वाह क्या लोग हैं? हम,
खुद को पवित्र कर गये,
पर गंगा मैली कर गये।

मंत्री जी आये स्वच्छता सभा लगवाये,
हम जनता भी उस सभा में लग गये।
फिर सभा के दूसरी सुबह ही देखे,
हम ही गंदगी कर गये

वाह क्या लोग हैं? हम,
खुद को पवित्र कर गये,
पर गंगा मैली कर गये।

निर्जीव शव के पवित्र और मुक्ति के चक्कर में,
सजीव गंगा को ही निर्जीव कर गये।

वाह क्या लोग हैं? हम,
खुद को पवित्र कर गये,
पर गंगा मैली कर गये।

राजू वर्मा
बी.एड.

जिन्दगी की राह पर

किसी सपने को दिल में खास मत रखना,
कल्पनाओं पर कभी विश्वास मत रखना।
जहाँ पर हो एक भी आग की चिन्गारी,
भूलकर भी कभी कपास मत रखना।।

जो बने आपकी सफलताओं में बाधक,
ऐसे लोगों को कभी पास मत रखना।
लेकिन मेहनत और कर्म के बिना यारों,
सफलता की कभी तुम आस मत रखना।।

देखकर गिरते हुए तुम चन्द लोगों को,
अपने मन को कभी उदास मत रखना।
तुमको रखना है अगर सिर हमेशा ऊँचा
तो खुद को व्यसनों का दास मत रखना।।

अगर तुम्हें लगे सब झूठे रिश्ते हैं साथी,
तो उनकी बातों पर विश्वास मत रखना।
पानी है जीवन में अगर सफलता तो,
निराशा को कभी पास मत रखना।।
किसी सपने को दिल में खास मत रखना

फुलेश्वरी मेरावी
बी.एड.

एक समय

वो भी एक समय था जब माँ के प्यार की खुशबू और माँ का आँचल हमेशा सर पर हुआ था,

पापा के डाँट से बचने के लिए माँ का सहारा लेते फिर भी पापा की बेटी कहलाते थे,

भाइयों से रूठना मनाना और फिर भी समय आने पर उनकी परछाई को आस–पास पाया करते थे,

हर जिद्द पूरा कराने का जरिया हुआ करते थे दादा–दादी और उनकी कहानियों की कल्पनाओ में डूबा हुआ वह पल किसी खुबसूरत लम्हे से कम ना हुआ करता था,

और आज उन सबको पीछे छोड़ आऐ है जिंदगी के ऐसे मोड़ पर जहाँ से उन बीते हुये लम्हों को वापस ले आना किसी के हाथ मे नहीं,

वो समय फिर आएगा जब दुबारा बेटी पराई होगी और यह कहानी फिर से दोहराई जाएगी।

दीप्ति बिन्नेथ
बी.एड.

शिक्षा का महत्व

बेहतर शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है। यह हममें आत्मविश्वास विकसित करने के साथ ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करती है। स्कूली शिक्षा सभी के जीवन में महान भूमिका निभाती है। सम्पूर्ण शिक्षा तंत्र को प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च माध्यमिक शिक्षा को तीन भागों में बांटा गया है। शिक्षा के सभी स्तर अपना एक विशेष महत्व और स्थान रखते हैं। प्राथमिक शिक्षा विद्यार्थियों को आधार प्रदान करती है, जो जीवन भर मदद करती हैं, वहीं माध्यमिक शिक्षा आगे की पढ़ाई का रास्ता तैयार करती है और उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरे जीवन में, भविष्य में आगे बढ़ने का रास्ता बनाती है। हमारी शिक्षा इस बात का निर्धारण करती है कि हम भविष्य में किस प्रकार के व्यक्ति बनेंगे। शिक्षा ही मनुष्य और पशु में अन्तर बताती है क्योंकि एक पशु अज्ञानी होता है और यदि मनुष्य को शिक्षा न प्राप्त हो तो वह भी पशु समान हो जाता है तथा वह सही निर्णय लेने में समर्थ नहीं होता है।

हेमंत कुमार
एम.एड.

अनमोल जीवन

गर तेरे तन में, चंद सासें भी मौजूद है।
मान ले इस जहां पे, तेरा वजूद है।।

सांसो का आना जाना, नहीं होती जिंदगानी।
अपने कर्मों से लिखनी होती है, जीवन की कहानी।।

राहें पथरीली कटीली, तपन भरी धूप में।
थोड़ी छांव भी बहुत है।।

गर तेरे तन में, चंद सासें भी मौजूद हैं।
मान ले इस जहां पे, तेरा वजूद है।।

खोया कितना, पाया कितना करते रोज हिसाब।
सेचकर तो बताओ, है कितने तेरे ख्वाब ।
जिंदगी एक कर्ज, तो सदकर्म कर्ज के सूद हैं।

गर तेरे तन में, चंद सासें भी मौजूद हैं।
मान ले इस जहां पे, तेरा वजूद है।।

जितेन्द्र कुमार शर्मा
एम.एड.

पिता ही अपनत्व का इन्द्रधनुष

दुनिया में पिता को जिससे सबसे ज्यादा प्रेम होता है, तो वो है, सिर्फ बेटियां। पिता के लिए बेटी बोझ नहीं फरिश्ता होती है, क्योंकि कहते है–

"ओंस की बूंद–सी होती है बेटियां
और स्पर्श अगर खुरदुरा हो तो रोती हैं बेटियां"
"बेटे तो सिर्फ एक वंश को रौशन करते हैं,
दो–दो वंशों को रोशन करती हैं बेटियां"

दुनिया के हर एक पुरूष के अंदर ऐसा कौन–सा पुरूष है, जिसके सामने एक बेटी, एक लड़की, एक औरत अपने आप को सुरक्षित महसूस करती हैं, केवल पिता के पास। बेटी में करूणा का भाव जन्मजात होता है। अगर कोई लड़की इस दुनिया में सबसे ज्यादा भरोसा करती है, तो वे हैं पिता। कहते हैं, कि बेटा पिता का मान होती है, पर बेटी पिता का स्वाभिमान होती है। जीवन में कभी ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिससे पिता के स्वाभिमान को ठेस पहुंचे क्योंकि पिता के लिए वो हजार मौत मरने के बराबर होगा। पापा के लिए दो लाइन–

"चंदा की चांदनी पापा, सूरज की रोशनी पापा,
धरती का धीरज पापा, अम्बर से ऊंचे पापा।।
पापा तो मेरे भगवान हैं, पापा तो मेरी पहचान हैं

बाप और बेटी का सम्बंध अलौकिक होता है, पिता की सोच एवं चिन्ता एक बेटी करती है और कोई नहीं। जब बेटी पिता के साथ उनके घर में रहती है तो पिता अपना प्यार, दुलार और स्नेह नहीं जताते, लेकिन जब एक बेटी दुल्हन बनकर किसी और के घर जाती है उस समय पिता का सारा प्यार, स्नेह और दुलार उनके आंखों छलकने लगते है। बेटी अपने पिता से अपनी विदाई के समय कहती है – पिता जी मैं आपके इस आंगन से आपका प्रेम मेरी झोली में भरकर ले जा रही हूं। मुझे कभी अपने बेटे से कम मत आंकना ।

पहले और आज के युग में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया हमारी पीढ़ियाँ बढ़ते जा रही है, परन्तु लोगों के अंधविश्वास और सोच वहीं के वहीं रह गये हैं। अगर कुल में बेटा का जन्म हो तो वहाँ उत्साह का माहौल दिखायी देता है और वही एक बेटी का जन्म हो, तो निराशा जनक माहौल दिखायी देता है।

भगवान ने संतानदी है, दोनों को एक समान प्यार और स्नेह दीजिए। एक समान शिक्षा दीजिए और एक समान परवरिश। बेटियों को ज्यादा रोक–टोक किया जाता है, ये मत करो वो मत करो पर बेटों को नहीं। बेटियां किसी घर की इज्जत होती है तो बेटों को क्यों नहीं बताया जाता कि किसी के घर की इज्जत के साथ खिलवाड़ मत करना। वो कहते हैं जिस घर में नारियों का सम्मान नहीं होता वहां देवता भी निवास नहीं करते।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"।

कल्पना ठाकुर
बी.एड.

मेरे पापा

मुझे सही दिशा दिखाते, सच्चे राहों पे ले जाते,
सारी बेड़िया तोड़ कर, हर राह में जाने देते।

प्यार से गोद में उठाते हैं,
हर खुशी की वजह बन जाते हैं।
वो पापा ही हैं जो पूरे घर का भार उठाते हैं,
रोज मुझे पलकों पे बिठाते, सीने से लगाते,
वो पापा ही हैं, जो मुझे कहानी सुनाते।

मंजिल की पहचान दिए, दुनिया का ज्ञान दिए,
हजारों दर्द सहें और चेहरे पर मुस्कान दिए।
वो पापा ही हैं, जो सारे सपने पूरे किए।
वो पापा ही हैं, जो घर आने के बाद बोलते,
दिन कैसा रहा।

वो पापा ही हैं जो रोज सुबह,
हमारे सपने पूरे करने में लग जाते।।

शकुन्तला

(छात्र जीवन) –यह समय फिर कभी नहीं आएगा

छात्र–जीवन एक ऐसा समय है जब आप स्वयं को भविष्य में मिलने वाली चुनौतियां हेतु तैयार कर सकते हैं। इस समय का ज्ञानार्जन इस समय पढ़ी हुई अच्छी आदतें मेहनत करने की समर्थता आपके भविष्य निर्माण की रूप रेखा बनाती है। जीवन में सुनहरे भविष्य हेतु, छात्र जीवन में संयम, मेहनत की आवश्यकता है। एक छात्र यदि यह समय व्यर्थ करता है तो फिर यह अपने जीवन में मौज–मस्ती ना सोचें, बल्कि सारा जीवन आटा–नमक का भाव पूछने में ही लगाना होगा।

जरा सोचें:–

"आप 5–7 वर्ष तक ही मौज मस्ती करना चाहते हैं, वो भी अपने माता–पिता के पैसों पर, या सारा जीवन स्वयं द्वारा अर्जित धन से मौज करना चाहते है।"

माँ–पिता की सलाह छात्रों को बहुत गलत लगती है। बात–बात पर बच्चों को दी जाने वाली सलाह, उन्हें डांटा जाना, उन पर पाबंदियों का लगाना, अच्छा बुरा समझना छात्रों को नहीं भाता है। छात्र माँ–पिता को 'जनरेशन गैप' के कारण से गलत ठहराते हैं, या पुरानी मान्यताओं के कारण गलत ठहराते है। प्रश्न सहीं या गलत का नहीं है। प्रश्न है, क्या आपके द्वारा छात्र जीवन में किये जा रहे कार्य लक्ष्य प्राप्ति के अनुरूप है या नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं, 'जनरेशन गैप' की दुहाई देकर आप लक्ष्य से भटक रहें है? कहीं ऐसा तो नहीं नई पुरानी मान्यताओं का बहाना कर आप गलत मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं?

यह भी याद रखें–

"आप जो भी कर रहें है, वह आपके भविष्य को प्रभावित करेगा। अभिभावक अपने जीवन में जो कुछ कर सकते थे, कर चुके। ये केवल इसलिये ही चिंतित रहते है कि आपका भविष्य अच्छा बने।"

आपका सही गलत कदम, उन्हें कम, लेकिन आपको सबसे ज्यादा प्रभावित करेगा यदि आप सहीं दिशा में अग्रसर हैं, तो यह आपके हित में है और यदि आप गलत दिशा में पतन की ओर जा रहे हैं तो भी सबसे ज्यादा कष्ट आपके जीवन में ही आता है। अतः आपके जीवन को अच्छा बनाना है तो सही दिशा में कदम बढ़ायें और आप स्वयं के हित में कार्य करें। छात्र–जीवन जैसा समय फिर कभी नहीं मिलेगा तो मैं आप सभी से आशा करती हूं कि आप यह बहुमूल्य समय केवल और केवल अपने भविष्य को बनाने में लगायेंगे। इतना स्वतंत्र समय, जब आपको किसी प्रकार के सामाजिक बंधनों से सरोकर नहीं है, आर्थिक परेशानियों से कोई मतलब नहीं है। आपको हर तरह का संभव सहयोग अविभावक प्रदान करते हैं, फिर भी आप स्वयं के हित में, सहीं मार्ग पर नहीं चल सकते तो फिर कब चलेंगे? अपने आत्मकर्ष हेतु मेहनत नहीं कर सकते तो आप जाने..... ।

संजू कुमारी
एम.एड.

जिम्मेदारियों का बोझ

जिम्मेदारियों का बोझ परिवार पर पड़ा तो।
ऑटो रिक्शा, ट्रेन को चलाने लगी बेटियां।।

साहस के साथ अंतरिक्ष तक बेध डाला।
सुना वायुयान भी उड़ाने लगी बेटियां।।

और कितने उदाहरण ढूँढ कर लांऊ।
हर शक्ति क्षेत्र आजमाने लगी बेटियां।।

वीर की शहादत पर, अर्थी को कांधा देके।
अब शमशान तक जाने लगी बेटियां।।

घर में बंटा के हाथ रहती हैं मां के साथ।
पिता की हर एक बाधा हरती है बेटियां।।

कटु बोल–बोलने से पहले सोचती है खूब।
मन मे डरती सहमती है बेटियां।।

बेटे हो भले उद्दण्ड, भले दुःखा दे आपका दिल।
कष्ट सहके भी धैर्य धरती है बेटियां।।

प्रश्न से ज्वलनशील सबके लिए आज।
नित्य प्रति कोख में क्यों मरती हैं बेटियां।।

शिवानी तिवारी
डी.एल.एड.

शादी में दहेज का प्रभाव

मैं सुरेश साहू, मेरा वर्ष 2016 में शादी करने का प्लान बना अपने सभी रिश्तेदारों को इस बात का पता चला कि शशि शादी करने वाला है। सभी रिश्तेदार मेरे ऊपर रहम करके पूछने लगे कि शशि तुम्हें किस तरह की लड़की चाहिये, उसमें क्या–क्या क्वालिटी रहनी चाहिये। मेरे द्वारा सभी को सिम्पल तथा सीधी– साधी लड़की की बात कही गई। सभी रिश्तेदार तथा दोस्त भी मेरी मदद करने में जुट गये। मेरे साथ मेरे मामा को गारजियन के रूप में साथ जाने को कहा गया। मामा का काम बस ये था कि लड़की तथा लड़की के घर वालों की जांच परख करना। अब लड़की दिखाने का सिलसिला जारी हुआ। जब मैं पहली बार लड़की देखने गया, वहां मुझे तो पसंद आयी परन्तु मामा को उनके घर वालों का व्यवहार अच्छा नहीं लगा, कारणवश यहां कैंसल हुआ, फिर वहां से निकलकर अगले दिन दूसरी जगह की लड़की व उनका घर मामा को पसंद आया क्योंकि उनका परिवार सपन्न था व मामा के इच्छानुसार दहेज देने के लिये भी राजी था, परन्तु मुझे वहां का रिश्ता नापसंद था क्योंकि उस का स्टेटस मेरे तुलना में काफी उच्च था। वहां से भी रिश्ता तय नहीं हुआ, तो फिर किसी तरह अगली जगह जाने का प्रोग्राम बना वहां मेरे दोस्त के द्वारा एक लड़की दिखाने का प्लान था, समयानुसार वहां भी पहुंचे वहां की लड़की मुझे पसंद आयी परन्तु जब लेन देन की बात सामने आयी तो लड़की पक्ष वाले के तरफ से वो रिश्ता भी टूट गया, जबकि ये लड़की मुझे बेहद पसंद आयी क्योंकि ये मेरे घर के सामान व इनके परिवार वाले भी मुझे भा गये, परिवार का व्यवहार भी अच्छा लगा लड़की भी स्नातक तक पढ़ी–लिखी व समझदार थी।

दहेज के रूप में दो लाख मेरे परिवार की ओर से मांग थी, परन्तु लड़की पक्ष से दहेज की रकम देने में असमर्थ थे और पुनः अगले दिन मुझे अलग–अलग को दिखाने के लिये ले जाया जाने लगा परन्तु ये सब ड्रामा मुझे अच्छा नहीं लग रहा था।

परन्तु मेरे पास उस लड़की का मोबाईल नं था, गये थे उस समय लिये थे। मैने एक दिन बेचैन होकर पार्क में शाम के समय आराम से बैठकर बेशर्म की तरह कॉल किया। कॉल उठाते ही मुझे उसने खरी–खोटी सुनाई कि जब रिश्ता कैंसल हो गया है तो कॉल करने का क्या मतलब है आपका? मैने अपने आप को गलत मानते हुये शांत रखते हुये बोला प्लीज मुझे आपसे बात करनी है, कॉल मत काटियेगा। कुछ क्षण चुप रहके वो मान गई, फिर बोली बोलिये क्या बात करनी है? मैनें हिम्मत जुटा कर कहा मुझे आपसे मिलना है। उसने कहा क्यों? प्रश्न करते हुये गुस्साने लगी। मैंने फिर से हिम्मत जुटा के शादी के बारे में बोल दिया। ना–ना कहते हुये किसी तरह बात बन गई। मैने अगले ही दिन उनसे मिलने उनके बताये स्थल पर एक घंटा पहले ही पहुँच गया। वो आयी मैने अपने मन में बनायी गयी बात को कहना शुरू किया –

"मैं आपसे ही शादी करूंगा और वो भी बिना दहेज के रकम आपके पिता से लिये हुये, वो बोली वो कैसे? आपके परिवार को तो दो लाख दहेज चाहिये। मैंने कहा मेरे परिवार को दो लाख मिलेगा और वो भी आपके पिता से नहीं, आपके द्वारा। वो बोली मैं कुछ समझी नहीं। मैं अपना प्लान बताया– मेरे कमाये हुये पैसे मेरे पास है उसे ही मैं आपको दूंगा और बस एक काम कीजियेगा कि उस राशि को आप मेरे परिवार वाले के खाते में डाल दीजियेगा। प्लान उनको भी अच्छा लगा। दोनो के बीच यही बात फाईनल हुई तथा फिर से हम दोनो का रिश्ता जुड़ गया और अब हम दोनो एक हैं।"

निष्कर्षः– *मेरा परिवार भी खुश, मेरा पैसा मुझे ही मिला और मेरा पसंदीदा जीवन साथी भी मेरे पास, बस थोड़ा ऊपर स्तर से सोचना पड़ा।*

शशिभूषण साहू
एम.एड.

नारी जीवन

परिवार और अपनों से मिली समाज की परंपराओं को जाना,
हर किसी ने कहा लड़की हो तुम छोड़ अपनो को,
किसी और के घर ही है तुमको जाना,
जिम्मेदारी हो तुम सिर्फ माँ–बाप और परिवार की,
लड़की की शादी करके विदा करना ही परंपरा है समाज की,
निकलो अपने ख्याबों से तुम ये घर अपना नही बेगाना है,
छोड़ तुमको सब कुछ यहीं पर एक दिन यहाँ से जाना है।।
लगा एक अजीब–सा सदमा क्यूँ नहीं मेरा घर अपना,
जन्म देने वालों को अगर छोड़ना ही हकीकत है,
इसके लिए फिर क्यूँ किसी की दुल्हन बनने की जरूरत है।।
है शादी अगर समाज की परंपरा तो,
मौत इंसानी जीवन की सबसे असलीयत है,
यदि छूटना है सब कुछ अपना, फिर क्यूँ न कुछ ऐसा कर जाऊँ
बेगानी होकर भी सबकी मैं, सबको अपना बना जाऊँ।।
नहीं कर सकती अगर उन जन्म देने वालों की उम्र भर सेवा,
तो क्यूँ करूँ फिर मैं समाज की सेवा,
हूँ अगर परायी मैं अपने जन्मदाताओं की,
तो नहीं जरूरत है मुझको फिर समाज के परम्पराओं की दुहाई की।।
समाज की पुरानी लकीर की फकीर मैं न बन पाऊँगी,
तोड़ के समाज की जंजीरों को मैं अपनी अलग–अलग पहचान बनाऊँगी,
दूर कर दे जो अपनो से ऐसी खोखली परम्परा मुझे मंजूर नहीं,
तोड़ दे मेरे बुलन्द हौसलों को अब इन झूठी रस्मों में इतना दम नहीं।।

सुमिता ठाकुर
बी.एड.

सफलता

सफलता की खुशी मनाना अच्छा है पर, उससे ज्यादा जरूरी है अपनी असफलता से सीख लेना।

जिसमें धीरज है और जो मेहनत से नहीं घबराता, कामयाबी उसकी दासी है।

सफलता मन की शीतलता से उत्पन्न होती है ठंडा लोहा ही गर्म लोहे को काट व मोड़ सकता है।

लक्ष्य पर आधे रास्ते तक जाकर कभी वापस न लौटे क्योंकि वापस लौटने पर भी आधा रास्ता पार करना पड़ेगा।

असफलता को मार्ग का एक मोड़ समझना चाहिए ना यात्रा की समाप्ति।

संभव और असंभव के बीच की दूरी व्यक्ति के निश्चय पर निर्भर करती है।

जो व्यक्ति अपनी गलतियों के लिए खुद से लड़ता है, उसे कोई भी हरा नहीं सकता।

सपने सच हो सके इसके लिए सपने देखना जरूरी है।

सुमन नाग
बी.एड.

ऐ इंसान

यूँ जिंदगी के सफर में वक्त जाया ना कर तू,
लोग क्या कहेंगे की बातों को सोचा ना कर तू।

चार दिन की जिंदगी में बहुत से वक्त ऐसे आएंगे,
जहाँ तू खुद को अकेला ही पायेगा,
चारों दिशा तुझे अंधेरा ही नजर आयेगा,
पर तू घबरा कर रास्ता ना बदल लेना,
हिम्मत से कार्य करते हुए आगे बढ़ना।

क्योंकि जब कोहरे के बाद रौशनी आती है,
तो सारा वातावरण गरिमामय हो जाता है।

इसलिए कहती हूँ कि ईश्वरकृति मानव,
तू चल और चलता चला चल,
तेरी भी मंजिल आएगी,
तू भी सितारों सा चमकेगा,
तेरा भी इतिहास लिखा जाएगा।

जीवन की कठिन परिस्थितियों को मुस्कुरा कर पार कर,
ऊपर वाले तेरे भी दर पे खुशियां सजायेंगे।

यूं जिंदगी के सफर में वक्त जाया न कर तू,
लोग क्या कहेंगे कि बातों को सोचा ना कर तू।।

सुप्रिया कुमारी
एम.एड.

चुनाव

किसी भी देश में चुनाव के दौरान होने वाली राजनीति उस देश के लोकतंत्र का एक अहम हिस्सा होती है। राजनीति के सुचारू और स्वच्छ कार्यान्वयन के लिए यह काफी आवश्यक है कि हम चुनावों में साफ–सुथरी छवि वाले लोगों को अपना नेता चुनें क्योंकि चुनाव के दौरान व्यक्तिगत स्वार्थ या फिर जातिवाद के नाम पर दिया गया वोट आने वाले भविष्य में हमारे लिए कई गुना हानिकारक हो सकता है।

किसी भी देश की राजनीति उस देश के संवैधानिक ढांचे पर कार्य करती है जैसे कि भारत में संघीय संसदीय लोकतांत्रिक गणतंत्र प्रणाली लागू है जिसमें राष्ट्रपति देश का प्रमुख होता है और प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है। इसके अलावा भारत में विधायक, सांसद, मुख्यमंत्री जैसे विभिन्न पदों के लिए भी चुनाव होते रहते हैं, लोकतंत्र पर शासन निश्चित अंतराल पर जनता द्वारा अपने राजनेताओं व जनप्रतिनिधियों का चुनाव किया जाता है।

एक लोकतांत्रिक देश के अच्छे विकास तथा कार्यान्वयन के लिए चुनाव और राजनीति का होना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इसके द्वारा उत्पन्न होने वाली चुनावी प्रतिद्वंदिता जनता के लिए लाभदायक होती है। चुनावी प्रतिद्वंदिता के फायदे या नुकसान भी हैं। इसके कारण लोगों में आपसी मतभेद हो जाता है। वर्तमान राजनीति आरोप–प्रत्यारोप का दौर है इसमें सभी राजनेताओं द्वारा एक–दूसरे पर विभिन्न प्रकार के आरोप लगाते हैं जिसके कारण कई सीधे व साफ छवि के लोग राजनीति में आने से संकोच करते हैं।

भारत का संविधान प्रत्येक नागरिक को उसके पसंद के प्रतिनिधि को मतदान करने का अधिकार है तथा देश के राजनीति में हर वर्ग को समान अवसर मिले इसी कारण कमजोर तथा दलित समुदाय के व्यक्तियों के लिए निर्वाचन सीट आरक्षित रहती है।

भारतीय चुनावों में वही व्यक्ति मतदान कर सकता है जिसकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक है। यदि कोई व्यक्ति चुनाव लड़ना चाहता है तो अपना नामांकन कराना होता है जिसके लिए न्यूनतम आयु 25 वर्ष है, भारत में कोई व्यक्ति दो तरीकों से चुनाव लड़ सकते हैं, किसी दल का उम्मीदवार बनकर उसके चुनाव चिन्ह पर जिसे सामान्य भाषा में ''टिकट'' के नाम से जाना जाता है दूसरा तरीका निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर दोनों ही तरीकों को उम्मीदवारों द्वारा नामांकन पत्र भरना और जमानत राशि जमा करना अनिवार्य होता है। इसके साथ ही वर्तमान समय में चुनावी प्रक्रियाओं में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन किये जा रहे हैं ताकि

अधिक से अधिक ईमानदार तथा स्वच्छ छवि के लोगों को राजनीति में आने का मौका मिल सके। सभी उम्मीदवारों को घोषणा पत्र भरना अनिवार्य कर दिया जिसमें उम्मीदवारों को अपने खिलाफ चल रहे गंभीर आपराधिक मामलों, परिवार के सदस्यों की सम्पत्ति का कर्ज का ब्यौरा तथा अपनी शैक्षिक योग्यता की जानकारी देनी होती है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में चुनाव और राजनीति एक–दूसरे के पूरक का कार्य करते हैं और लोकतंत्र के सुचारू कार्यान्वयन के लिए यह आवश्यक भी है इसके साथ ही हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि चुनावों के दौरान उत्पन्न होने वाली प्रतिद्वंदता लोगों के बीच विवाद तथा दुश्मनी का कारण ना बने और इसके साथ ही हमें चुनावी प्रक्रिया को और भी पारदर्शी बनाने की आवश्यकता है ताकि अधिक से अधिक साफ–सुथरे तथा ईमानदार छवि के लोग राजनीति का हिस्सा बन सकें।

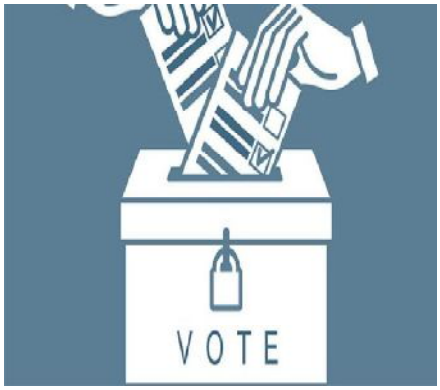

तोरण कुमार रजक
डी.एल.एड.

स्कूल पर आल्हा

स्कूल जहाँ पिंजरा बन जाये,
और किताबें केवल बोझ।
कमर टूट जाये बच्चों की,
ऐसी शिक्षा है एक रोग।

रटो, रटो और रटते रहो बस,
और अक्ल से काम ना लो।
ऐसी पढ़ाई नहीं काम की,
जितनी भी चाहे पढ़ लो।

आओ भारत देश के वीरो,
बचपन को लें आज बचाय।
ऐसी शिक्षा को ले आयें,
बच्चा फूल–सा खिल–खिल जाय।

तलेश्वर जंघेल
बी.एड.

जीवन में शिक्षा का महत्व

शिक्षा इतनी महत्वपूर्ण क्यों है क्योंकि यह हमारे जीवन का एक हिस्सा है। बचपन और उच्च शिक्षा, शिक्षा जीवन में सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।

शिक्षा उन दिमागों को सशक्त बनाती है जो अच्छे विचारो और विचारों को धारण करने में सक्षम होगें।

शिक्षा छात्रों को जीवन के निर्णय लेते समय विश्लेषण करने में सक्षम बनाती है। जीवन मनुष्य के लिए विभिन्न अस्तित्व की चुनौतियां देता है, लेकिन शिक्षा मानव को असफलता से लड़ने और जीवन में सफलता पाने के लिए मार्ग दर्शन करती है।

शिक्षा केवल एक चीज है जो भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और पर्यावरणीय समस्याओं को दूर कर सकती है।

शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।

शिक्षा अच्छे विद्यार्थी, माता – पिता, डॉक्टर, भाई – बहन और ईमानदार नागरिक बनने में मदद करती है।

एक शिक्षित व्यक्ति के संपर्क में रहना और उसके साथ एक बुद्धिमानीपूर्वक बातचीत करना ज्ञान का विस्तार करता है और मन में एक निश्चित रचनात्मकता और आनंद का परिचय देता है।

शिक्षा के द्वारा ही समाज का विकास होता है तथा एक शिक्षित समाज ही मनुष्य को विकसित होने के लिए प्रेरित करता है।

वेदप्रकाश
बी.एड.

प्यारी सहेलियाँ

सहेलियाँ जब मिलती हैं,
हँसी तिललियों–सी उठती हैं।
बातें झरने–सी झरती हैं,
आँखे अनकहे राज सुनाती हैं।
..... सहेलियाँ जब मिलती हैं।।

हवा कुछ ज्यादा इठलाती हैं,
रात जाने कौन–सी रागिनी गाती हैं।
दीवारें धीमे–धीमे गुनगुनाती हैं,
..... सहेलियाँ जब मिलती हैं।।

चिरैयों–सी चहकती है,
जूही–सी महकती हैं।
रूठती मनाती ठनकती है,
..... सहेलियाँ जब मिलती हैं।।

दीवारें खामोशियाँ बुनती हैं,
हवा भी चुप–सी गुजर जाती हैं।
हंसी किस बियावान में खो जाती हैं,
..... सहेलियाँ जब मिलती हैं।।

किसी रात जी भर बतियाती हैं,
फिर जूही चिरैया बन जाती हैं।
बंद आँखों में रोशनी भर जाती हैं,
..... सहेलियाँ जब मिलती हैं।।

पुष्पा साहू
बी.एड.

क्या दोष है मेरा ?

बहुत परेशान हूं मैं मां, बता क्या है मेरा गुनाह ??

किस दौर का पुरूष सभ्य होगा, कब मुझ पर पहरा नहीं होगा ??

तू मुझे देह ढकने को कहती है, फिर कहां लज्जा मेरी सुरक्षित रहती है ?

देखा राम की सीता बनकर भी, भाग्य स्त्री का बदला नहीं।

अग्नि–सी पावन होकर भी, क्या मुझे वनवास मिला नहीं ?

रावण ने हरा....मां बता क्या दोष था मेरा ? द्वापर में द्रोपदी बनकर देखी मेरी अवस्था, किसी ने भी न सुनी मेरी व्यथा।

समक्ष समस्त परिवार के अपमानित हुई, वस्तु समान दाव पर लगाई गई।

पति, पिता समान वो पुरूष कौन थे ? जो मेरी पुकार पर मौन थे।

जब दुःशासन ने चीर हरा, मां बता क्या दोष था मेरा ?

इस दौर के विचार दूषित है, था इस युग में नारी शापित है।

अहम् पुरूष का सर्वोपरि है, कही छल से तो कही बल से नारी शोषित है।

रावण और दुःशासन आज कई हैं, पर बुलाने से आ जाएं ऐसे मधुसूदन अब नहीं है।

भोग है कर्म के, कि हृदय नहीं मर्म किसी के, खुद पत्थर बन बैठा है भगवान, किसी से नहीं डरता पापी इंसान।

देखा विनम्र होकर भी, अहंकार नर का कम होता नहीं, जब कोई नियत से ही हो बुरा

मां बता क्या दोष है मेरा! ?

मां बता क्या दोष है मेरा! ?

ललिता देवी
एम.एड.

शिक्षा की नई प्रणाली पर अनुच्छेद

प्रस्तावना : *भारत में शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था उन्नीसवीं शताब्दी में लॉर्ड मेकाले के मूलतः क्लर्क तैयार करने के लिये बनाई थी। उस समय अंग्रेजों को ऐसे पढ़े लिखें भारतियों की आवश्यकता थी, जो उनके शासन कार्य में हाथ बंटा सकें। आजादी के बाद इस दूषित शिक्षा प्रणाली पर अनेक चर्चायें और विचार–विमर्श हुये। कई प्रकार के आयोग बैठाये गये और उनकी सिफारिशों के अनुसार समय–समय पर अनेक परिवर्तन हुये, लेकिन मूल ढांचे में विशेष परिवर्तन नहीं हो पाया और शिक्षा का सहीं उद्देश्य पूरा नहीं हो पाया।*

शिक्षा का सहीं उद्देश्य : *शिक्षा का सहीं उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगींण विकास करके उनको देश का आदर्श नागरिक बनाना है। वे तभी ऐसा कर सकेंगे जब शिक्षा समाज करने के बाद वे अपने पैरों पर खड़े होकर स्वयं रोजी–रोटी कमाने लायक बन सकें। आज हमारी शिक्षा उन्हें अक्षरज्ञान देकर विविध विषयों का सैद्धांतिक ज्ञान तो देती है, पर उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने योग्य नहीं बना पाती।*

नई शिक्षा प्रणाली : *उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये शिक्षाविदों ने देश के सामने एक नई शिक्षा प्रणाली का सुझाव दिया, जिसे 10+2+3 प्रणाली कहा जाता है। इस व्यवस्था के अंतर्गत विद्यार्थी को स्नातक बनने में कुल 15 वर्ष का समय लगेगा। पहले दस वर्ष स्कूल में अक्षरज्ञान तथा सामान्य विषयों की पढ़ाई के लिये लगाये जायेंगे।*

इस दौरान सभी मूल विषयों का सामान्य ज्ञान दिया जायेगा, जिनमें भाषायें (अंगेजी, हिन्दी तथा मातृभाषा या एक अन्य भाषा), गणित, मानविकी सामान्य विज्ञाान, सामाजिक ज्ञान जैसे विषय पढ़ाये जायेंगे। इसके बाद एक सार्वजनिक परीक्षा होगी, जिसे माध्यमिक परीक्षा का नाम दिया गया है। यदि विद्यार्थी इसके बाद पढ़ाई छोड़ना चाहेंगे, तो उन्हें क्लर्क आदि जैसी सामान्य नौकरियां मिल सकेंगी।

माध्यमिक परीक्षा के बाद दो वर्ष की अतिरिक्त पढ़ाई भी स्कूलों में ही होगी, जिसे उच्चतर माध्यमिक नाम दिया गया है। यह पुराने इंटरमीडियट के समकक्ष होगी। इन दो वर्षों में व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया जायेगा। इस व्यावसायिक शिक्षा को प्राप्त करके लोग अपना रोजगार करने में समर्थ हो सकेंगे।

जो व्यक्ति उच्च शिक्षा पाना चाहेंगे, उनके लिये चुने हुये विषयों की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध होगा। उदाहरण के लिये डॉक्टरी, इंजीनियरिंग अथवा ऐसी ही किसी विशेष शिक्षा को प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को इनसे संबंधित विषयों का विशेष ज्ञान दिया जायेगा तथा अन्य उच्च शिक्षा के विषयों के आगे के अध्ययन का आधार प्रदान किया जायेगा। इन दो वर्षों की पढ़ाई के बाद पुनः सार्वजनिक परीक्षा होगी।

इस उच्चतर माध्यमिक परीक्षा के बाद विश्वविद्यालय की 3 वर्ष की शिक्षा के लिये केवल कुशाग्र बुद्धि चुने हुये छात्र ही लिये जायेंगे। सामान्य औसत विद्यार्थियों की शिक्षा 10+2 के बाद ही समाप्त हो जायेगी। इंजीनियरिंग, डॉक्टरी या अन्य विशेष शिक्षा संस्थानों में 10+2 के बाद प्रवेश मिल सकेगा।

नई शिक्षा प्रणाली की प्रगति : *उपर्युक्त शिक्षा प्रणाली अधिकांश राज्यों में लागू हो गई है। इसे लागू करने के लिये केन्द्र सरकार ने राज्य सरकार को आर्थिक सहायता दी है। समूचे देश में शिक्षा का स्तर रखने के लिये और अध्यापकों को प्रशिक्षण देने का भार केन्द्र सरकार ने उठाया है।*

नई प्रणाली का लाभ : *इस नई शिक्षा प्रणाली के अनेक लाभ है। इससे समूचे देश में शिक्षा का स्तर समान हो सकेगा। 12 वर्ष की शिक्षा के बाद विद्यार्थी किसी न किसी व्यवसाय में पारंगत हो सकेंगे तथा विश्वविद्यालयों में भीड़ कम हो जायेगी और उच्च शिक्षा के स्तर में सुधार होगा।*

उपसंहार : *नई शिक्षा प्रणाली को पूर्णरूप से सफल बनाने के लिये अभी बहुत–कुछ करना है। परीक्षा प्रणाली में सुधार अत्यावश्यक है, ताकि बढ़ती हुई नकल करने की प्रवृत्ति रूक सके। शिक्षा के स्तर में सुधार के लिये विद्यालयों के लिये सहायक सामग्री की व्यवस्था तथा अध्यापकों के प्रशिक्षण की जरूरत है। इसके लिये बहुत बड़ी धनराशि चाहिये। यदि हम दृढ़ता से इस दिशा में प्रगति करते रहें, तो कुछ वर्षों में हमारा शिक्षा का स्तर विश्व के किसी भी विकसित देश के स्तर के नीचा नहीं रहेगा।*

माधवी भारती
एम.एड.

स्वामी विवेकानंद जी के सुविचार

1. *उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाये।*
2. *खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।*
3. *तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता। तुमको सब कुछ खुद अंदर से सीखना है। आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नहीं है।*
4. *सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।*
5. *बाहरी स्वभाव केवल अंदरूनी स्वभाव का बड़ा रूप है।*
6. *ब्रम्हांण्ड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं, वो हमारी हैं जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते और फिर रोते है कि कितना अंधकार है।*
7. *विश्व एक विशाल व्यायाम शाला है जहां हम खुद को मजबूत बनाने के लिये आते हैं।*
8. *दिल और दिमाग के टकराव में दिल की सुनो।*
9. *शक्ति जीवन है, निर्बलता मृत्यु है। विस्तार जीवन है, संकुचन मृत्यु है। प्रेम जीवन है, द्वेष मृत्यु है।*
10. *किसी दिन, जब आपके सामने कोई समस्या ना आये– आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं।*

चित्ररेखा साहू
एम.एड.

कम्प्युटर का ज्ञान हर किसी के लिये महत्वपूर्ण

आज के आधुनिक युग में विद्यार्थी हो या शिक्षक हर किसी को कम्प्युटर का ज्ञान होना आवश्यक है। कम्प्युटर हर क्षेत्र में सभी के लिए महत्वपूर्ण है कम्प्युटर आज समय की मांग बन चुका है। भारत मे लगभग सभी निजी व्यवसायिक संस्थानों, बैंकों, कई सरकारी संस्थानों व सेवाओं को कम्प्यूटरीकृत किया जा चुका है। भविष्य में भी यह प्रक्रिया जारी रहेगी। इसलिये कम्प्युटर का ज्ञान हर किसी के लिये महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षा में कम्प्यूटर का महत्व

कम्प्युटर का शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत बड़ा योगदान है। कम्प्युटर के इंटरनेट की वजह से जरूरी ज्ञान और हर विषय की जानकारी आदि के लिए भी इसे पूरे विश्व में इस्तेमाल किया जाता है। कम्प्युटर की मदद से विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में भी विद्यार्थियों का काफी ज्ञान बढ़ा है। कम्प्युटर ने हमारे पढ़ने और ज्ञान को रखने के भी तरीके काफी बदल दिये हैं। आजकल हम सारे काम स्कूल और कॉलेज में कम्प्युटर की मदद से करने लगे हैं। विद्यार्थी की हाजरी से लेकर, उसकी परीक्षा के अंक, उसका रजिस्ट्रेशन, कक्षा की समय सारणी आदि सभी कार्य कम्प्युटर की मदद से संभव हैं। आजकल परीक्षा के परिणाम भी कम्प्युटर की मदद से ही लिए जाते हैं। कम्प्युटर पढ़ाने और पढ़ने के लिए भी काफी तरीकों से इस्तेमाल किया जा रहा है। कम्प्युटर की तकनीकी मदद से ही आजकल ई–लर्निंग का विकल्प आया है जिसकी मदद से हम कहीं पर भी बैठ कर पढ़ सकते हैं।

इंटरनेट

इंटरनेट की मदद से हम अपने दोस्तों और रिशतेदारों से जुड़े हुए रहते हैं। कम्प्युटर हमें जानकारी के साथ–साथ मनोरंजन के भी तरीके देता है। आजकल के समय में बस हमें सर्च इंजिन में एक शब्द लिखने की देरी है उसको लिखते ही काफी तरह के परिणाम हमारे सामने आ जाते हैं। विश्व में जानकारी को इधर से उधर पहुँचाने में इंटरनेट ने हमारी काफी मदद की है। इंटरनेट की मदद से हम कम्प्युटर में मूवी, विडियो, न्यूज आदि सब देख सकते हैं। कम्प्युटर की मदद से हम रोजगार भी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि काफी तरह के काम और बिज़नेस हम ऑनलाइन इंटरनेट की मदद से ही करते हैं। आजकल ऑनलाइन बिजनेस, ऑनलाइन शॉपिंग आदि चीजों ने हमारे धन और समय की काफी बचत की है।?

गणना

कम्प्युटर ऑफिस में गणना और डाटा को स्टोर करने के काम में आता है और घर पर घरेलू काम करने के लिए भी कम्प्युटर काफी जरूरी है। यह हमें घरेलू बजट और हर महीने के डाटा को स्टोर करने के काम में आता है।

बिजनेस

बिजनेस में कम्प्युटर की काफी अहम भूमिका होती है। क्योंकि आजकल माइक्रो कम्प्यूटर काफी सस्ते हैं इसलिए छोटी छोटी कंपनियाँ भी कम्प्युटर इस्तेमाल करती है। वेतन की गणना, स्टॉक मार्केट, मार्केटिंग, उत्पाद का आयात निर्यात आदि सभी काम कम्प्युटर की मदद से ही किए जाते हैं। बिजनेस की जानकारी, लेटर, इन्वाइस आदि सभी ईमेल की मदद से कम्प्युटर द्वारा ही भेजे जाते है। कम्प्युटर का इस्तेमाल ऑफिस के मैनेजर, क्लर्क और एडमिन डिपार्टमेंट आदि सभी के द्वारा हर संस्था में रोजाना के काम के लिए किया जाता है। माइक्रोसॉफ्ट वर्ड आदि की मदद से हम किसी लेख को सही कर सकते हैं इस विकल्प से हमारे समय और धन की काफी बचत हुई है। काफी ऑफिसों में कम्प्युटर को लेटर छापने, पेमेंट के बैलेन्स और निमंत्रण आदि के काम को करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

बैंकिंग और फाइनेंस

सेविंग अकाउंट, लोन, फिक्स्ड डिपॉजिट आदि के डाटा को सही से रखने के लिए इसका इस्तेमाल बैंकों में किया जाता है। जो लोग फाइनेंस आदि का काम करते हैं वह भी यह जानते हैं कि कम्प्युटर उनके लिए कितना जरूरी है क्योंकि इसकी मदद की वजह से ही उनका काफी समय बचता है। इलेक्ट्रोनिक फंड ट्रान्सफर में भी कम्प्युटर काफी उपयोगी होता है। कंपनी भी अपने सहायकों के अकाउंट में इसी की मदद से आसानी से वेतन को भेज देती है। होटल, पेट्रोल पम्प, रेस्टोरेंट आदि में भी हम इसका काफी इस्तेमाल करते हैं। जैसा कि हम आजकल देख रहे हैं बिटकोइन आदि के भी आदान प्रदान में कम्प्युटर का काफी इस्तेमाल किया जाता था।

उद्योगों में कम्प्युटर का इस्तेमाल

जब भी किसी इंडस्ट्री का हम सेटअप करते हैं तब हमें कस्टमर के डाटा, सहायकों के डाटा, उत्पाद की जानकारी, लाभ हानि आदि के लिए कम्प्युटर की काफी जरूरत पड़ती है। कम्प्युटर उत्पादों के डिजाइन बनाने और उनके निर्माण में भी काफी सहायक होता है। कम्प्युटर की मदद से हमें यह भी पता चलता है कि किस को किस समय कौन–सा उत्पाद हमें पहुंचाना है।

मेडिकल के क्षेत्र में कम्प्युटर का उपयोग

हॉस्पिटल और क्लीनिक में हम कम्प्युटर का इस्तेमाल रोगी के रिकॉर्ड, डॉक्टर की समय सारणी, नर्स आदि की जानकारी, दवाइयों की खरीद और बिक्री के उपकरणों का सारा लेखा–जोखा रखने के काम में लेते हैं। काफी तरह के उपकरण कम्प्युटर की मदद से डॉक्टरों को मरीजों के उपचार के काम में आते हैं। यह तो हमें भी पता है कि मेडिकल के क्षेत्र ने कम्प्युटर की मदद से काफी उन्नति की है। रिसर्च के क्षेत्र में भी कम्प्युटर का भरपूर इस्तेमाल किया जाता है और रहेगा। कम्प्युटर की मदद से काफी लोगों के उपचार में आसानी हो गयी है। डॉक्टर नई नई तकनीक इस्तेमाल करके आजकल मरीजों का इलाज बड़ी आसानी से कर देते हैं।

कुलेश्वर यादव

शिक्षा के संबंध में स्वामी विवेकानंद जी के महान विचार

देश की वर्तमान और भविष्य में आने वाली परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये हमें अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने की अति आवश्यकता है। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो समय के अनुकूल हो।

हमारी दुर्दशा का मूल कारण वह नकारात्मक शिक्षा प्रणाली है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल क्लर्क पैदा करने की मशीनरी मात्र है, यदि केवल यह इसी प्रकार की होती है तो भी मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ किन्तु इस दूषित शिक्षा प्रणाली द्वारा शिक्षित भारतीय युवक अपने पिता, पूर्वजों अपने इतिहास एवं अपने संस्कृति से घृणा करना सीखता है। यहां तक कि पवित्र वेदों, पवित्र गीता को थोथा एवं बुरा समझने लगता है। अपने अतीत, अपनी संस्कृति पर गौरव करने के बदले वह उनसे घृणा करने लगता है और विदेशियों की नकल करने में ही गौरव कई वर्षों की इस दूषित शिक्षा प्रणाली का दुष्प्रभाव स्पष्ट दिखता है कि यह शिक्षा एक भी यथार्थ व्यक्ति के निर्माण में सफल नहीं रही है। ऐसी शिक्षा का महत्व ही क्या जो हमें केवल परतन्त्र बनने का मार्ग दिखाती है जो हमारे गौरव स्वावलबंन एवं आत्मविश्वास का हरण करती है। जिस प्रकार हम स्वतंत्र रूप से कुछ भी करने में असमर्थ रहते हैं कुछ परीक्षायें कर लेना या घुआंधार व्याख्यान देने की शक्ति प्राप्त कर लेना ही शिक्षित हो जाना नहीं कहलाता। शिक्षा वह है जिसके बल से लोगों को जीवन संग्राम के लिये समर्थ किया जा सके। पोथियाँ पढ़ लेना शिक्षा नहीं है, न ही अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का नाम शिक्षा है। शिक्षा तो वह है जिसकी सहायता से इच्छा शक्ति का वेग और स्कूर्ति अपने वश में हो जाये और जिससे अपने जीवन के उद्देश्य पूर्ण हो सके। शिक्षा का मतलब अपने दिमाग में सूचनाओं एवं जानकारियों को भरना नहीं है बल्कि जानकारियों का सहीं उपयोग करना ही शिक्षा है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को व्यवहारिक बनाना है जो शिक्षा व्यावहारिक नहीं है वह व्यर्थ है। हमें ऐसी शिक्षा की जरूरत है जिससे चरित्र निर्माण हो मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे।

हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे कि व्यक्ति अपनी आर्थिक जरूरत पूरी कर सके, ऐसी शिक्षा जो दूसरों के बारे में अच्छा सोचने और करने को कहती है। ऐसी शिक्षा की जरूरत है जिसका अनुसरण करने से व्यक्ति अपने परिवार समाज व देश का गौरव बढ़ा सके।

एम.डी. नसीम अंसारी
एम.एड.

योग एक जीवन दर्शन

योग एक जीवन दर्शन है, योग आत्मानुशासन है, योग एक जीवन पद्धति है, योग व्याधिमुक्त व समाधियुक्त जीवन की संकल्पना है। योग आत्मोपचार एवं आत्मदर्शन की श्रेष्ठ आध्यात्मिक विद्या है। योग व्यक्तित्व को वामन से विराट बनाने की या समग्र रूप से स्वयं को रूपांतरित व विकसित करने की आध्यात्मिक विद्या है। योग मात्र एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति नहीं, अपितु योग को प्रयोग परिणामों पर आधारित एक ऐसा परिणाम है जो व्याधि को निर्मल करता है। अतः यह एक सम्पूर्ण विद्या का शरीर रोगों का ही नहीं बल्कि मानस रोगों का भी चिकित्सा शास्त्र है।

योग एलोपैथी की तरह कोई लाक्षणिक शिक्षा नहीं अपितु रोगों के मूल कारण को निर्मल कर हमें भीतर से स्वस्थता प्रदान करता है। योग को मात्र एक व्यायाम की तरह देखना या वर्ग विशेष की मात्र पूजा–पाठ की एक पद्धति की तरह देखना संकीर्णता पूर्ण, अविवेकी दृष्टिकोंण है। स्वार्थ, आग्रह, अज्ञान एवं अहंकार से ऊपर उठकर योग को हमें एक–एक सम्पूर्ण विज्ञान की तरह देखना चाहिये।

योग की पौराणिक मान्यता है कि इससे अष्टचक्र जागृत होते है एवं प्रणायाम के निरंतर अभ्यास से जन्म जमान्तर के संचित अशुभ संस्कार व पाप परिक्षीण होते है।

नृपेन्द्र नाथ तिवारी
एम.एड.

स्त्री शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा

स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरूषों की ही तरह शामिल करने से संबंधित है। दूसरे रूप में यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति है। भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरूषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिए जितना की पुरूष हो। यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता शिक्षित न होगी तो देश की संतानों का कदापि कल्याण नहीं हो सकता है।

स्त्रियों के विकास और अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि स्त्री शिक्षित हो तो वे अपने घरों की सारी समस्या का समाधान निकाल सकती है। स्त्री शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
रूढ़िवादी सांस्कृतिक नजरिये के कारण लड़कियों को अक्सर पाठशाला जाने की अनुमति नहीं दी जाती है। इसका एक कारण गरीबी भी देखा जा सकता है, क्योंकि घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण भी माता–पिता अपने सभी बच्चों को शिक्षा देने में असमर्थ होते हैं। जिसके कारण वे अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते और लड़कियों को भी मजदूरी पर ले जाना पड़ता है। भारत में वैदिक काल से ही स्त्रियों के लिए शिक्षा का व्यापक प्रचार था। मुगल काल में भी अनेक महिला विदूषिओं का उल्लेख मिलता है।

पूर्णजागरण के दौर में भारत में स्त्री शिक्षा को नये सिरे से महत्व मिलने लगा। ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा 1854 ई. में स्त्री शिक्षा को स्वीकार किया गया था। कोलकाता विश्वविद्यालय महिलाओं को शिक्षा के लिए स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था। 1986 ई. में राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक राज्य को सामाजिक रूपरेखा के साथ शिक्षा का पुर्नगठन करने का निर्णय लिया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1947 से लेकर भारत सरकार पाठशाला में अधिक लड़कियों को पढ़ने का मौका देने के लिए अधिक लड़कियों को पाठशाला में दाखिला करने के लिए और उनके स्कूल में उपस्थिति बढ़ाने की कोशिश में अनेक योजना बनाये हैं, जैसे कि निःशुल्क पुस्तकें, मध्यान्ह भोजन आदि। इस मिशन में महिलाओं की अशिक्षा की दर को नीचे लाने की कोशिश की गई। महिलाओं की ऐसी जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें शिक्षित किया जाना चाहिए जिससे कि वे विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर सकें। महिलाएं शिक्षकों, डाक्टरों, वकीलों और प्रशासक के रूप में काम कर रही हैं। शिक्षित महिलायें अच्छी मां बन सकती है। बालक के विकास पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। माता ही अपने बच्चे को नागरिकता का पाठ पढ़ाती है। बालक का यह प्रारंभिक ज्ञान पत्थर पर बनी अमिट लकीर के समान जीवन का स्थायी आधार बन जाता है। इसलिए स्त्री शिक्षा हमारे लिये बहुत ही उपयोगी व अहम् भूमिका निभाती है।

जिस प्रकार मनुष्य को जीने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। अगर नारी ही शिक्षित नहीं होगी तो वह न तो सफल गृहणी बन सकेगी और न कुशल माता। अगर एक मां ही अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन करके उनका मानसिक विकास कैसे कर पाएंगी और एक स्वस्थ समाज का निर्माण एवं विकास संभव नहीं हो पाएगा।

अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षित नारी ही भविष्य में निराशा एवं शोषण के अंधकार से निकल कर परिवार, स्त्री और शिक्षा को मूलरूप से जोड़ने की अवधारणा है।

पंकज कुमार
एम.एड.

बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका

आजाद भारत में 3–4 दशकों पूर्व से ही शिक्षा में तत्परिणाम स्वरूप व्यापक परिवर्तन के दृश्य राजनीति में, धर्म में, अर्थ– जगत तथा शिक्षा जगत में होने वाले युगान्तरकारी परिवर्तन की दिशा को समझकर तद्नुरूप में कितनी तेजी से परिवर्तन आ सकते हैं। इन सब पर शिक्षक की गहरी दृष्टि होनी चाहिये थी, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि समाज को एक बहुत छोटा–सा भाग ही उचित प्रतिक्रिया करते हुये सही दिशा की ओर अपने कदम बढ़ा सका। शिक्षक समाज का एक बृहत्तर भाग इस परिवर्तन करने से चूक गया।

इस स्थिति ने शिक्षक के गुरू माने जाकर समाज का पथ, प्रदर्शक होने पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया। समाज में सम्मान को उत्तरोतर ह्रास होने के साथ उसके ''युगद्रष्टा'' और युगस्रष्टा'' होने की स्वीकार्यता खोने लगी। दुर्बल और दिशाहीन होते ही राजनैतिक और आर्थिक तंत्र के सशक्त हाथों ने उसकी यह भूमिका बलात् छीन ली। नेतृत्व के इन बदलते हाथों ने एक अराजक स्थिति का निर्माण कर दिया और दिशाहीनता सब ओर व्याप्त हो गई।

गुर्रुब्रम्हा, गुर्रुविष्णु, गुर्रुदेवो महेश्वरः ।
गुर्रुसाक्षात्, परब्रम्ह, तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

यह श्लोक, गुरू को ब्रम्हा, विष्णु और महेश से ऊपर साक्षात् मानते हुये उसे वन्दनीय और पूजनीय मानने वाला ना रहकर उसे शिक्षक– दिवस पर हर मंच से उच्चारित किया जाने वाला एक निरर्थक मंत्र बनकर रह गया। शिक्षक ने व्यापक परिवर्तन के क्रान्तिकारी युग द्वारा द्वार पर दी गई दस्तक को अनसुना कर अपना सम्मान खो दिया, यदि पूरी तरह नहीं भी तो कम से कम उसमें उल्लेखनीय कमी आई।

चार दशक पहले के शिक्षकों की तुलना में नया हड़बड़ाता हुआ शिक्षक कच्चा सिद्ध होने लगा, बावजूद अपनी बड़ी–बड़ी डिग्रियों के। अवलोकन करने वाले नये जागरूक समाज ने देखा कि शिक्षक गुरू न रहकर नौकर हो गया है। नौकर सम्मानीय थोड़े ही होता है। उसके द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति को लेकर निरन्तर चल रहे तर्क विहीन विलाप पर सहानुभूति प्रकट होने की स्थिति भी लुप्त हो गई।

लोगों के अनुसार यह 'पीढ़ियो का अन्तराल' पर वास्तव में 'जनरेशन गैप' केवल शाब्दिक ज्यादा है। यह 'संवादहीनता का अन्तराल' है। शिक्षा और लेखन के क्षेत्र में लगातार कार्य करने के मेरे अनुभव के आदर्श शिक्षक का जो चित्र मेरे मस्तिष्क में बना रखा है – वह है – विद्यार्थियों का सच्चा मार्गदर्शक, सच्चरित्र, आचरण से निःशब्द शिक्षा देने वाला, कर्मठ तथा शिक्षा पालक और विद्यार्थियों में तेजी से आ रहे परिवर्तन के स्वरूप को समझकर स्पष्ट दृष्टिकोण रखकर पीढ़ि को शिक्षित और संस्कारित करने के लक्ष्य का संकल्प लेकर चलने वाला समर्पित व्यक्ति। ऐसे व्यक्तित्व का धनी ही वास्तव में गुरू होता है।

आज भी शिक्षक और केवल शिक्षक ही इस कार्य का बीड़ा उठाकर राष्ट्र निर्माण के इतिहास में अपना स्थान अक्षुण बना सकता है। प्रतीक्षा है शिक्षक के जागने की। उसके जागने से पहले यह अंधकार लगातार बहराता जायेगा। संकल्पबद्ध होने में वह जितनी देर करेगा चुनौती की आकृति सुरक्षा मुख होती जायेगी। इन सारे डरावने प्रश्नों, गंभीर चुनौतियों का एक ही जवाब है–सच्चरित्र, समर्पित, संकल्पबद्ध विराट शिक्षक समाज एक जुट होकर, एक मतेन एक कार्य योजना बना कर युद्ध स्तर पर जब इन समस्याओं के समाधान के लिये आगे आयेगा तभी सब कुछ संभव है। दुश्यंत ने ठीक ही कहा है।

कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता।
एक पत्थर तो तबीयत से उछाले यारों।।

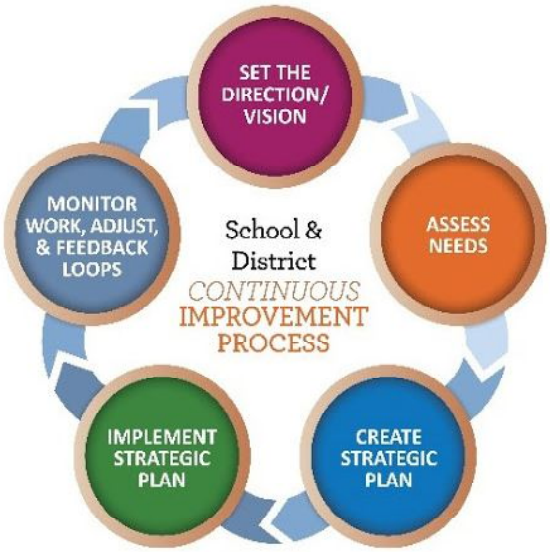

मिथिलेश तिवारी
एम.एड.

पर्यावरण प्रदूषण

किसी बदलाव के कारण प्राकृतिक वातावरण का दूषित होना पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है। आज पूरे विश्व में अधिक जनसंख्या व कई प्रकार की गाड़ियाँ तथा जगह–जगह कारखानों से दूषित हवा व पानी के कारण पर्यावरण पूरी तरह से दूषित हो रहा है। गाड़ियों से धुआँ निकलने व अधिक ध्वनियाँ निकलने के कारण पूरे पेड़–पौधे नष्ट हो रहे है। आज पूरे विश्व में अधिक जनसंख्या के कारण, मनुष्य अपनी सुविधा के पेड़–पौधों को काट रहे हैं। जिससे ऑक्सीजन की कमी व भूमि बंजर पड़ रही है।

मनुष्य को दुनिया में हवा, पानी, ऑक्सीजन, भोजन बहुत ही सरलता से मिलने के कारण अनदेखा कर देता है, और उसी अनदेखी के कारण आज पूरी पृथ्वी बंजर व प्रदूषित हो गयी है।

जगह जगह पॉलीथीन कागज अन्य चीजों के कचरे पड़े हुए, जिसके कारण पृथ्वी पूरी सड़ रही है अन्य प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो रही है। कई प्रकार के कारखानों से गंदा पानी समुद्र व तालाब में मिलने के कारण समस्त जीव जंतु नष्ट हो रहे हैं। यह सबसे अधिक चीन में देखा जा रहा है। मनुष्य अपनी सुविधाओं को देखते हुए अधिक प्रकाश का उपयोग करते हैं। जिसे वातावरण प्रदूषित हो कर चाँद व सितारा दिखाई नहीं देता है, जिससे अंधापन व कैंसर जैसी बीमारियों का खतरा रहता है। पेड़–पौधों की कटाई व दूषित पानी तथा हवा के कारण पूरे पेड़–पौधे नष्ट हो रहे, जिसे जानवरों को उनकी भोजन की प्राप्ति नहीं हो रही है, जिसके कारण जीव जंतु प्यास व भोजन की वजह से मर रहें है व जंगल से बाहर आ रहे हैं।

प्रदूषण के कई प्रकार हो सकते हैं, जिनमें मुख्य पाँच हैं जिसमें पहला वायु प्रदूषण जिसमें वर्तमान में डस्ट फैल रहा है। जिसके कारण हर साल 70 लाख हर घंटे 800 मिनट में 13 लोग मरते हैं। दूसरा जल प्रदूषण जिसमें दूषित कीटाणु हानिकारक रसायन पानी में जाकर मिल जाता है व कई प्रकार की बीमारी फैलाता है, तीसरा भूमि प्रदूषण अधिक जनसंख्या के कारण मनुष्य उपज बढ़ाने के लिए भूमि में 79 प्रतिशत खाद्य मिलाता है व भूमि धीरे–धीरे सड़ रहा है, चौथा प्रदूषण प्रकाश जिसमें जरूरत से ज्यादा उपयोग किया जाता है, जिसमें अंधापन जैसी बीमारियाँ होती है। अंतिम है ध्वनि प्रदूषण पृथ्वी पर ध्वनि का सही शोर 35–45 डेसीबल है। जिसे मनुष्य बस में 80–95 डेसीबल व रेलगाड़ी में 100 डेसीबल जैसी ध्वनियाँ निकलती है। 2011 के अनुसार 30 लाख गाड़िया बिकी थी, जो वर्तमान में 6 गुना अधिक हो

गई है।

मनुष्य आज अपनी सुख सुविधाओं में इतना व्यस्त है कि उन्हे भूल की चिंता नहीं है। आज वर्तमान ऐसा आ गया है कि मनुष्य खुद की मौत को तैयार कर रहा है, जिससे कई प्रकार बीमारियाँ व अन्य चीजों से घिर कर धीरे–धीरे मरेगें तथा मनुष्य इसे रोकने के बजाय आज बहुत ज्यादा बढ़ा रहा है।

रीमा साहू
डी.एल.एड.

हमर मितानिन दीदी

मितानिन अपने समुदाय में स्वास्थ्य के प्रति निःस्वार्थ भाव से कार्य करती है। हर कार्य में मितानिन की भूमिका होती है। वह अपनी जिम्मेदारियां बखूबी निभाती हैं। किसी भी व्यक्ति की जान कितनी जरूरी है ये हम सब जानते हैं, लेकिन इसके लिए अहम योगदान मितानिनों ने ही दिया है गर्भवती माता की उचित देखभाल एवं प्रसवकालीन दिनों में सही परामर्श तथा सही कदम उठाती हैं। प्रसव के समय न दिन देखत है न ही रात उसकी सेवा में लगी रहती है। नवजात की उचित देखभाल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के बारे में सही जानकारी देना सही समय पर टीकाकरण के बारे में जानकारी देना तथा माता को इसके बारे में जानकारी देना व प्रेरित करना शासन से मिलने वाली सेवाओं आदि के बारे में लाभ पहुंचाने में सहायक होना। मामूली सर्दी, खांसी, बुखार होने पर अपने दवा पेटी से उपचार करना तथा आवश्यकता के अनुरूप चिकित्सालय जाने के लिए परामर्श देती है। मितानिन बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक हर वर्ग के लोगों के लिए स्वास्थ्य के प्रति सहज भाव रहती है। उनमें होने वाली घातक बीमारियां आदि का निःशुल्क ईलाज कराने में भूमिका निभाती है तथा उनका इलाज पूरा कराती है। शहरी हो या ग्रामीण मितानिनों की भूमिका वैसे ही बरकरार रहती है। इलाज के लिए पैसे न होने की स्थिति में शासन से मिलने वाली सुविधाओं का लाभ दिलाकर इलाज पूरा कराती है। परिवार भ्रमण के लिए जाती है, नवजात बच्चे के देखभाल के लिए 42 दिन गृह भेंट करती है तथा साथ ही साथ उसका टीकाकरण पूरा कराती है। इसके अतिरिक्त आंगनबाड़ी केन्द्रों में तथा स्कूलों में अपनी सहभागिता एवं निगरानी बनाये रखती है। समुदाय में बैठक कर स्वच्छता के लिए जन जागरूकता का कार्य करती है। सामाजिक कुरीतियां जैसे बाल–विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा व कन्या भ्रूण हत्या इत्यादि का विरोध करती हैं। नशीले पदार्थों के सेवन तथा उनसे होने वाली घातक बीमारियों को रोकने के लिए अनेकों अभियान चलाये गये। कहीं–कहीं पर सफलताओं ने उनका साथ दिया।

मितानिनों ने अपनी सफलताओं का अनोखा परिचय दिया है। उनकी सफलताओं पर अनेकों पुस्तकें व मितानिन का अगला अंक हर माह प्रकाशन किया जाता है व उनके कार्य को देखते हुए उनका सम्मान किया जाता है।

इस प्रकार मितानिनों ने अपनी भूमिका को ऐसे बनाये रखा है कि हम सब उन पर गर्व कर सकते हैं। हमें उन पर गर्व व सम्मान करते रहना चाहिए।

अंकजीत सोनवानी
डी.एल.एड.

जीवन एक संघर्ष

जब तक जीवन है तब तक संघर्ष है, लाइफ हमेशा आसानी से नही गुजरती हर दिन कोई न कोई चुनौती, कोई न कोई संघर्ष लाइफ में आ जाता है और आता ही रहता है।

ऐसा कोई नहीं, जिसकी लाइफ में चुनौतियां न हो दुखी न हो, कठिनाई न हो, रूकावट न हो, कोई अपनी नौकरी बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है, कोई अपने रिश्ते बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है और कोई नौकरी ढूंढने के लिए संघर्ष कर रहा है।

संघर्ष का दौर तब से शुरू हो जाता है जब एक बच्चा मां के पेट में होता है, जब वो चलना, बोलना सीखता है उसके लिए भी संघर्ष करता है, गिरता है, उठता है, फिर गिरता है जब बड़ा होता है पढ़ाई के लिए संघर्ष उसके बाद नौकरी के लिए संघर्ष करते हुए जीना होता है।

जैसे सोना पीटने के बाद खरा बनता है, उसी प्रकार मनुष्य जीवन में कई उतार चढ़ाव को झेलते हुए आगे बढ़ना पड़ता है, तभी वह सफलता को प्राप्त करता है।

निलेश कुमार
बी.एड.

SIGNATURE OF GOD

"Not only does God play dies, but he sometimes throws them where they can't be seen"- Stephen Hawking. He was a specially abled child but he become a physicist, cosmologist and an author also. Those children are the special gift of the God, with unique ability, so I would like to call them as "signature of God". They need encouragement, empowerment and support.

According to census of India 2011, one in every 10 children is born as specially abled. People with mental, physical and developmental conditions are differently abled, because they possess an exclusive set of abilities. Therefore, we can say that they are not differently abled but abled differently. We need to give special care, attention and sensitive treatment to discover their special abilities. It is important for every citizen to realize the need for inclusive consideration of such people in to the society to empower their talent.

In India out of 121 Cr populations, 2.68Cr persons are disabled, which is 2.21% of the total population. However, society is unaware to effectively handle this minority as well as growing population. Due to lack of knowledge of their parents and society they often face abuse and social discrimination. To avoid such situations kids with special needs to be send to inclusive or special schools under the supervision of specially trained teachers. In urban areas the circumstances is better than rural areas, 60% children getting schooling and proper care. Despite improvement in the health care system in the country, the situation of these children remains deplorable, particularly in the rural areas and lower socio-economic population. They are denied basic education or vocational training and thus do not have any scope of employment.

Our PM Narendra Modi, during his radio address, suggested that the term 'Divyang' (divine body) instead of 'Viklang' (disabled). An opportunity required for the person with disabilities to access and benefit from education, employment, health and social services. We need more knowledge to help these children to increase their self-esteem. The special children's parents are also special and the parents are the primary motivation of any child, so they required being stay updated with new developments in therapies and educational techniques. One never knows in whom a Stephen Howking or an Albert Einstein is hidden.

BEENA G. PILLAI
M.Ed.

LOVE ME TOO

The baby girl still in her mother's womb was happy and excited. Time has passed so quickly and un a few days it will be time for me to leave this warm place and see a whole new world. But she was also worried and concerned will I be safe in the world or not "Will my parents be happy"? "Will my society be happy? "I know any fears are not meaningless. She thought of what scene of the outside world from the safety of her mother's womb she had seen. She heard of the narrow- minded people who discriminated between boys and girls just the other day. I saw what happened in my neighbor's house. A boy was born and there was joy all around. The whole family was very happy and they organized a grand party. While on the other hand. When a baby girl like me was un another house, there was no you in the family, they did not have even a small party. It seemed to me that a baby girl was a curse on their fate. I was so worried to see that. There were restrictions imposed on her education will I be allowed to go to a good school or not? Three-four days ago I heard my father talking to his friends. They were congratulating my father and saying "Don't they would come to know that I was a girl. Would they be unhappy? But I request them and all of you that when I open my eyes in this world. Please don't hate me kill me Love me too. Just love me too.

NANDANI KASHYAP

REFLECTION OF LEARNING

For some it's a privilege
For others it's a right,
The difference between darkness
And a future that is bright.

Some'll think a burden
Where others see as a gift,
The key to moving forward
And to give your life a lift.

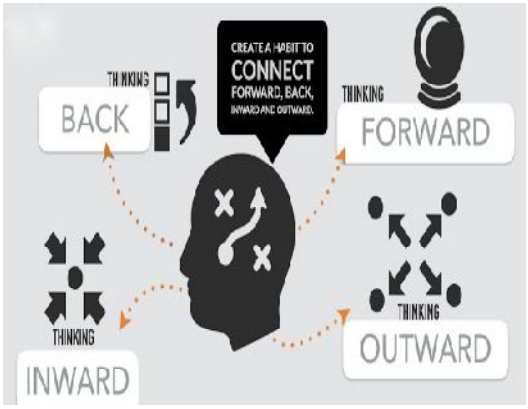

If education is not your calling
Look beyond it's door,
The world can be a teacher
Many adventures are in store.

As long as you are learning
Your education grows,
That will lead to contributions
As you share the things you know.

RANJEETA KUMARI
B.Ed.

GENERATION GAP

"My parents don't understand me". This is the common sentence heard from to days children who came under the age of 15-20 years. Today we take our parents to be aliens and living with them is like strangers forced to live under the same roof. This is the main cause of depression for parents and children nowadays. Generation gap arises when there is difference in attitude or when there is lack of understanding between two generations. The values and the way of living life have changed to a great extent. Today, everybody like to live and behave in his own way. Our parents make sacrifices to meet our demands they give us guidance and instructions they believe it to be beneficial for us. On the other hand we face extreme pressure of exams and cut throat competition and think that our parents know nothing about the demands of this paced world. Eventually despite of love and affection for each other both our parents and we are drained of energy and find ourselves unable to understand the other. Consequently there is lack of communication between us which develops in larger rift. Besides lack of communication imposition of restrictions by our parents on us also creates tensions. Our parents impose restrictions on us because they are concerned and afraid of us falling into bad company & habits.

At this time there is a way of bridging what appears to be a gap. If we genuinely want to improve our relationship with our parents we should try listening to them just like we would listen to a value friend. Instead of always saying "you don't understand me" stop and think. Do you ever try and understand your parents? This small steps can do wonders in initiating a healthy family atmosphere and reducing friction between two generations that are right from the perspective. Their only folly is that they are viewing the same thing from opposite direction by time and experience or lack of these force them to do so.

KOMAL KUMARI

IMPORTANCE OF EDUCATION FOR WOMEN

Women education is a catches all term which refers to the state of primary, secondary, tertiary and health education in girls and women. There are 65 Million girls out of school across the globe; majority of them are in the developing and underdeveloped countries. All the countries of the world, especially the developing and underdeveloped countries must take necessary steps to improve their condition of female education; as women can play a vital role in the nation's development.

Education makes women more confident and ambitious; they become more aware of their rights and can raise their voice against exploitation and violence. A society cannot at all progress if its women weep silently.

Women are the soul of a society; a society can well be judged by the way its women are treated. An educated man goes out to make the society better, while an educated woman; whether she goes out or stays at home, makes the house and its occupants better.

"If you Educate a woman,
you Educate a nation."
-Dr. James Emmanuel
Kwegyir Aggrey.

Conclusion

Educating women is integral to the economical and social development of a nation. Women play a responsible role in the houses and societies. An educated woman can bring some positive changes in her own house as well as in the society. No nation can achieve development in a true sense if it leaves its women behind on education.

AKANKSHA GUPTA
B.Ed.

ARYABHATA

Aryabhata was born in 476 AD in Pataliputra, Magadha, Bihar (modern Patna). He was an Indian mathematician and a great mathematician-astronomer of the classical era of Indian astronomy. He studied both Hindu and Buddhist traditions.

Aryabhata came to Nalanda University to complete his studies. Nalanda was a major center of education at that time. When his book 'Aryabhatiya' (Book of Mathematics) was considered a masterpiece, the then Gupta ruler Buddhagupta made him head of the university. Aryabhata also set up an observatory at the Sun Temple in Taregna, Bihar.

Aryabhata's contribution to mathematics is of equal importance as well. It is approximate. And he was the first mathematician who gave the table of Sines. Uri know student and scholar of mathematics around the world, now.They've was just generated a new way to type in words to 100 billion such large numbers, large numbers were expressed in the language of poetry.

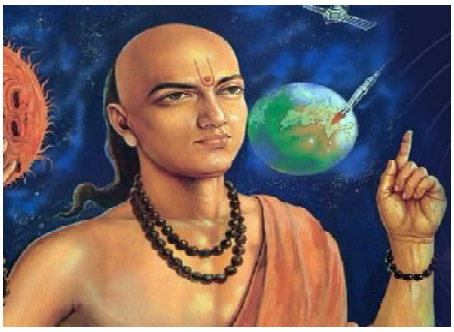

AKANSHA THAKUR
M.Ed.

THE IMPORTANCE OF EDUCATION IS SAME FOR ALL

SWAMI VIVEKANANDA, "If the poor cannot come to education, education must reach them, at the plough, in the bakery factory, elsewhere."

Education is not related to caste and gender so we cannot reserve the Right of Education for any individual group of people because of the importance of education is same for all. Especially for kids and women's it is highly essential. Education is the key to leading successful human life. A human life is incomplete without education. Education is preparation a person to face everyday life.

Every person wants to archive success in a particular field in his life and he accepts Education for this. It is through education that a person helps in the progress of his country and increases the National income of his country, which gives the country a high status in the world. Education is the milestone of every type of national development. With education, all the nations can develops its economy and society to be better than before. I believe all type of education, specially the basic education, creates awareness in both women and men that makes them self-reliance and self dependent. It has the power to create stability, understanding and equality among people, family, society and further, the nation.

In present time, we can see that women's are working together with men's shoulder to shoulder. Seeing the importance of education, the government of India started various schemes to make education accessible to every person. ***Like- Sarva shiksha abhiyan (2000) Mid day meal (15 Aug 1995), Rashtriya madhyamik shiksha abhiyan (March 2009),National scheme of incentives to girls for secondary education (May 2008)*** *etc Scholarship, reservation, free books, free uniforms, etc are the some attractive programme launched by the government to provide education to more girls and poor children.*

CANCLUSION: - *Proper and good education is very important for all of us. It is process of achieving knowledge, values, skills and moral habits. A man without education is like a building without foundation. "Education is the powerful weapon we can use to change the world."-* ***NELSON MANDELA.***

ANITA SHALINI TOPPO
M.Ed.

NO-DETENTION POLICY IN THE SCHOOL

OVERVIEW: *As per the current education system in India, all the students up till class 8 will automatically be promoted to next class. No one can be failed as per the right to education Act. This is known as the 'NO-DETENTION POLICY'. There are no examination in the narrow traditional sense of the word up to class8. Instead, the act mandates a process of continuous and comprehensive education to assess and evaluate the student's learning. Stoping dropouts from the school due to peer pressure were the main reason the Right to Education Act included the no-detention provision. If it is reversed, many students would stop going to school when they fails.The section 29(2) (h) of the RTE Act makes a comprehensive and continuous evaluation (CCE) mandatory, wherein schools are expected to use text results to improve teaching and learning of the child.If a student is made to repeat a grade, there's a strong chance he or she will discontinue learning.There can be modifications such as each school should conduct exams to ascertain which student is weak in what subject. If the child is weak, the school should take additional classes or special coaching.*

CRITICIZED OVER NDP: *Because of this policy falling standard of education. Nobody is interested in studies,nobody is interested in teaching because of this policy. Student have no fear of failing even students do not respect their teachers. It is not Right to Education but Right to Certificate. If no merit is checked while giving promotion to another class,the children will never learn the importance of studying. If of No detention policy continues, it will leave a negative impact on the standard of education in india and force the children to face more harsh in future.*

THE STAND OF VARIOUS STATE IN THIS REGARD: *All States/UTs were asked to share their views on the No-Detention policy. 28 States have shared their views on the No Detention policy out of which 23 States have suggested a modification to the No Detention policy.Various states including Delhi, have raised serious objections against the no-detention policy, citing it as a reason of high failure and dropouts in classes 9 and 10.*

NEW PROPOSAL IN NDP: *When the no detention policy is scrapped, an enabling provision will be made in the Right of children to free and compulsory education amendment bill which will allow states to detain students in class 5 and class 8 if they fail in the year-end exam.*

CONCLUSION: *The policy should either be renovated with adequate changes to neutralize the ill effect or replaced with a new policy that would take a balanced approach. The prime objective should be to effect an all round development of children and equipping them with life skill.*

NABIN BISWAS
B.Ed.

ARTICLE ON HONESTY

According to saying that honesty is the best policy one should be loyal, always tell truth in his or her life. It is not always the easiest way out of a situation. However for the brave hearted who do not seek ways out of situation it is the only way to deal with a situation or a crisis: Often being honest can mean coming under the wrath of others. There might be the fear of a backlash but one must keep in mind that in the end truth always prevails and honesty is the best policy. It might not be the easiest thing, being honest, but it is the only thing to be.

One must remember always that, 'To error is human and to forgive divine.' So when you have erred coming clean is the only opinion. You may be punished for it, you might have to bear the consequences of it, but if you are honest you will earn the forgiveness and respected of those around you. Honesty is undoubtedly the best policy.

ISHA SHARMA
M.Ed.

EDUCATION CAN CHANGE US

Nelson Mandela has rightly said that "Education is the most powerful weapon which you can use to change the world." Yes education is the key to eliminate all problems. If you want to grow and be successful then you need to be educated!

Education is an essential need!

Education provides you the tools to improve the quality of life in modern society both economically and sociologically. Education is the power and no one can ever deny this fact. Education has the power to change your entire life. Starting from promoting gender equality to reducing poverty, it is one gesture in which you receive information and give systematic instructions in return. So in order to be successful you need education.

How does education change you?

Learning is never - ending process, every human being keeps on learning till the end of life. Learning modifies your thinking capabilities and conception. Thus your ideas keep changing due to it. This change helps you to interact with others. You feel free to express your ideas and this is how education changes you.

How does education change society?

Society is made of us different kinds of people and the mind set of each of them differs a lot. An education one can guide to the right path in a better manner, he/ she can come up with a variety of ideas which may be related to political participation, social equality or environmental sustainability.

Education helps you to solve problems

Every problem comes with a solution but sometimes problem - solving can be difficult and tedious. An educated person will always try to find the answer 'What ?', 'Why ?' and 'How ?' . This very attitude will help him/ her solve problems .

Education helps you fight poverty

Poverty and education are very much related to each other because people living in poverty may stop going to school so they can work, which leaves them without literacy and numeracy skills, which anyhow effects their careers. Hence education increases individual earning and put an end to your lifelong sufferings.

Education gives you courage to speak against injustice.

The most common way people give up their power by thinking they don't have any said Alice walker. Educated people know what is right and what is wrong. So it something is going wrong anywhere, then an educated person has the courage to raise voice against the injustice. Truly educated people will not refuse to stand up against injustice. Hence it is rightly said that education can change people, communities, entire nations and even the future of humanity.

SONALI DAS
M.Ed.

WOMEN EMPOWERMENT

Women Empowerment is a process whereby women become able to organize themselves to increase their own self-reliance. Women are deprived of decision making power, freedom of movement, access of education, access to employment, exposure to media, domestic violence, dowry and child marriage. The problems that were faced by women in past days still exists today to some extent due to lack of education, lack of utility, financial constraint, social status and traditional barriers. "Women are worshiped as goddess in INDIA, but not given her true position." India is a male dominated Country. Education is the key factor for women empowerment, prosperity, development and welfare.

Discrimination of women from womb to tomb is well known. There is continued inequality and vulnerability of women in all sectors and women oppressed in all spheres of life, they need to be empowered in all walk of life. In order to fight against the socially constructed gender biases, women have to swim against the system that requires more strength. Such process comes from the process of empowerment and empowerment will come from the education. Education informs others of preventing and containing the diseases, and it is an essential element of efforts to reduce malnutrition. The Government and other private Institutions are supporting women in the leadership positions in public sector. Leadership of women in the public sector is the key of development in the Nation. The Rural area is unutilized this is mainly due to existing social customs. Women empowerment is one big issue facing by India it is most important to create awareness and understanding of the problems of women's in all the top policy and decision making.

Women should be empowered by providing them education, self help groups. Providing minimum needs like nutrition, health, sanitation, and housing. Society should change the mentality towards the word women. Bharat Ratna Dr. Bhimrao Ramjim Ambedkar rightfully deserves the credit for enshrining women empowerment in the constitution of India.

REBEKA KACHHAP
M.Ed.

ARTHRITIS

ABSTRACT

Casuarina equisetifolia Lin. (Casuarinaceae) has been used traditionally for treating inflammation, cancer and other diseases, but its efficacy has not been scientifically examined in treating arthritis. Present study determines antiarthritic potential of the methanolic extracts of Casuarina equisetifolia Lin. bark (MALCE).

Antiarthritic activity of Casuarina equisetifolia Lin. bark (MALCE) extracts in Complete Freund's Adjuvant (FCA) Induced arthritis in rat model was appraised at 200 and 400 mg/kg, b.w. doses for 21 days, respectively; Body Weight, Paw Edema, Arthritic Index, Hematological Parameters and Biochemical profile were evaluated

Plant extract 200 and 400 mg/kg, b.w. significantly increased Body Weight and significantly decreased in paw Odema and Arthritic Index as compared to the disease control. In Hematological Hb, RBC, WBC and ESR were evaluated extract treated animal result exhibited significantly increasement in Hb, RBC and significantly decresment in WBC and ESR. In evaluation of Biochemical Parameters significant decresment found in evaluation of Urea, AST, ALT and ALP. When Total Protein and Albumin were evaluated not significant change observed.

KEYWORDS

Complete Freund's adjuvant, Odema, autoimmune, proinflammatory, TNFa,

INTRODUCTION

Arthritis is a combination of two Greek words 'Arthro' means joint and 'Itis' means inflammation. So, persistent joint synovial fluid inflammation is termed as rheumatoid arthritis (RA) 1. RA is autoimmune disease, body's immune system attacks own body's tissues; Such as swelling, cartilage degradation and loss of joint function. The higher secretion of synovial cells activated by proinflammatory factors such as IL-1, TNFa, and PGE2 is thought to be a key step in the destruction of cartilaginous and bony tissues in RA joints. IL-1, TNFa, and PGE2 overproduction play potential pathogenic roles in the establishment of rheumatoid synovitis, in the formation of pannus tissue and in the process of joint destruction2. It is not only effects joints but also affects other parts of body such as skin, eyes, lungs and nerves system 3,4. Hallmark of RA are persistent symmetric effect of joints resulting in muscle aches and Joint pain. Anti-citrullinated protein antibodies (ACPA) produced by plasma cells during the primary phase of RA, stimulate osteoclast differentiation while, synovitis at the onset of disease leads to the production of cytokines, thus ensuing in bone

erosion and bone erosion leads to joints deformities 5. Up to date, the cause of RA is not fully understood. Although a number of drugs (non-steroidal or steroidal anti-inflammatory agents and immunosuppressant) used in the treatment of RA have been developed over the past few decades, there is still an urgent need for more effective drugs with lower side effects6.

The plant Casuarina equisetifolia Lin. (Casuarinaceae), trees are monoecious. The male and female flowers are light brown and inconspicuously tiny, fruits rounded, wide, hard, warty, brown, pinecone-like. The seeds are winged samaras. The leaf twigs are jointed. The dead, brown, fallen leaf twigs litter the ground under the trees like pine needles. The bark on older trees is rough, gray brown and flaking on the exterior and beefy red brown on the interior 7-10.

It is commonly found, along the coastal area and open forests in both wet and dry zones. It is native to South-East Asia, Australia and Polynesia. It is also cultivated as an ornamental, for wind-breaks or as a medicinal plant in some tropical countries in the South Pacific 10, 11, 12.

The plant is a source of biologically active compounds such as catechin, ellagic acid, gallic acid, quercetin, and lupeol13, coumaroyl triterpenes14, d-gallocatechin12, tannin15 and proline16,17 Casuarina equisetifolia Lin. has been reported to be used as an astringents 18, antidiarrheal, dysentery, headache, fever, cough, ulcers, toothache19, anticancer antibacterial, antifungal, anthelmintic, antispasmodic, antidiabetic20,21, inflammation, stomachache, diarrhea, dysentery and nervous disorders 22. In view of the fact that the plant parts have been widely exploited for its medicinal values, this study focused on investigating its proximate constituents, Thus the purpose of the present study has been carried out to explore the Anti-arthritis activity of methanolic bark extract of Casuarina equisetifolia Lin. frunds adjunts arthritis.

MR. P. EMANNUAL
Principal, Nursing

छत्तीसगढ़ के बासी

गजब मिठाथे रे संगी, मोर छत्तीसगढ़ के बासी

ईही हमर बर तिरथ गंगा, ईही हमर बर मथरा कासी

उठथन बिहनिया करथन मुखारी, अऊ झड़कथन बासी

दिन भर करथन कामबुता, पेट नई होवय खाली

दार दरहन के कामे नईये, नई लगाय साग तरकारी

दही मही संग नुन मिर्चा, गोन्दली मेकर संगवारी

के दिन ले बनाबो मालपुआ, के दिन ले बनाबो तसमई पुरी

कतका ला बिसाबो सेव डालिया, के दिन ले खाबो सोहारी

समोसा, जलेबी पोहा खोआ, रसगुल्ला नइ मिठावय हमला

नई खाए सकन होटल के रोज, तेलहा फूलहा भजिया

सहरिया मन के नकल जो करबो, हो जाहि जग हासि

सबले सस्ता सबले बढ़िया, मोर छत्तीसगढ़ के बासी

जय छत्तीसगढ़

चंदा साहू
एम.एड.

छत्तीसगढ़ बोली

छत्तीसगढ़ी के भुईयाँ, जिहा मया पिरित के छाँव,
ये भुईयाँ के रहइया, मैं छत्तीसगढ़िया आँव।
छत्तीसगढ़ी के बोली गुरतुर, छत्तीसगढ़ी मैं गोठियाँव,
ये भाखा ला बोले मा, मैं थोरके नई लजाव।

छत्तीसगढ़ी गोठिया के देखव, कतका मजा आथे,
सबके संग मे रहि के मनखे, दुख पीरा ला भुलाथे।
छत्तीसगढ़ी महतारी मैं, तोर कोरा मा दिन बिताव,
जय हो महतारी तोर, मैं तोर चरण में माथ नवाव।
तोर कोरा मा महतारी, मैं भूख पियास ला भुलाव,
अऊ बड़ गर्व से कहिथव, कि मैं छत्तीसगढ़िया आँव।।

मीठ लागे हमर छत्तीसढ़ी बोली भाखा,
सब्बों गोठिया के एकर मरजाद ल राखा।
परदेसिया भाखा ला जम्मो पोगरियावथे,
अऊ महतारी भाखा ल भुलावत जाथे।
पढ़व–लिखव अऊ गुनव संगवारी,
छत्तीसगढ़ी भाखा आय हमर महतारी।
का शरम हे अपन के बोली बोले मे,
एक–दूसरा ल मया के रंग में घोले म।

त्रिवेणी शोरी
बी.एड.

कलयुग

सावन मा सुख्खा परथे अऊ फागुन मे गिरथे करा
खेत म फसल उढ़ जाथे, अऊ जंगल पढ़थे दुरिहा
बेसरम के माज बढ़गे, सिरतोन मेंग कलयुग हां आगे
स्गा सोधर के सुवागत म, पहली बनस शरबत चाय पानी
अब कहां ले भेट परही, आघू ले आथे महुआ रस के पानी
नेवता होथे कुकरी बोकरा के अरसा सुहारी नंदागे
सिरतोन म गा कलयुग हां आगे
खासी खुखरी के दवाई पहिली रहाये जीरा अऊ धनिया
बड़े–बड़े अस्पताल खुलगे, नई दिखय बैध अऊ गुनिया
किसम–किसम के बीमारी आगे सिरतोन म गा कलयुग आगे
टुरा मन ह बाल बढ़ाये टुरी मन हा हिप्पी कटावें
बासी खाथे डोकरी दाई बहु खाते ताते तात ग
बहु के पाछु पाछु बेटा भागे सिरतोन म गा कलयुग आगे
पहिली पहिरे मोटहा धोती अऊ बारह हाथ के आधा लुगरा
अब तो संगी रिगी चिंगी आधा तोपएं हे तो आधा ऊघरा
फैसन मा दुनिया लुभागे सिरतोन म गा कलयुग आगे

दीप्ति
डी.एल.एड.

//अपोलो महाविद्यालय एक परिचय.....//

अपोलो कॉलेज, अंजोरा, दुर्ग (छ.ग.) जो कि एन.सी.टी.ई से मान्यता प्राप्त व हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग से सम्बद्ध है। महाविद्यालय को हेमचंद यादव विश्वविद्यालय से स्थायी सम्बद्धता प्राप्त है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा महाविद्यालय को **2(f)** *की मान्यता प्राप्त की गई है। महाविद्यालय ने गुणवत्तापूर्ण संस्था के मानक रूप में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा* **B** *ग्रेडिंग प्राप्त की है। यह दुर्ग रेल्वे स्टेशन से मात्र 6 किमी. की दूरी पर अंजोरा ग्राम में स्थित है। सृष्टि एजुकेशन एवं वेलफेयर सोसायटी* ***डी.एल.एड. बी.एड. व एम.एड.*** *पाठ्यक्रम तथा अन्य पाठ्यक्रमों में* ***फिजियोथेरेपी (बी.पी.टी.), नर्सिंग (एम.एस.सी.,बी. एस.सी., जी.एन.एम., पोस्ट बेसिक बी.एस.सी.), फार्मेसी (बी.फार्मा., डी फार्मा.),*** *है। महाविद्यालय परिसर में ही विद्यार्थियों को छात्रावास, जिम, स्पोर्ट्स, स्टेशनरी शॉप, बैंक, ए.टी. एम., आपातकालीन एंबुलेंस (108) तथा आवश्यकतानुसार विभिन्न लैब की सुविधाएँ प्रदान की जाती है। कॉलेज 7 एकड़ की भूमि पर स्थित है, चारो ओर हरा–भरा एवं शांत व सुरम्य वातावरण है, जो कि विद्या अध्ययन करने के लिए अनुकुल है। यहॉ उच्च शिक्षित एवं प्रतिभावान प्राध्यापकों द्वारा शिक्षण दिया जाता है। महाविद्यालयीन विद्यार्थियों हेतु कुशल एवं उच्च शिक्षित शिक्षक हैं, जो शिक्षण में नई–नई तकनीकों का प्रयोग कर शिक्षण को प्रभावी बनाने के साथ–साथ विद्यार्थियों के उज्जवल एवं बेहतर भविष्य के लिए निरंतर प्रयासरत् हैं। महाविद्यालय में गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने के साथ–साथ विद्यार्थियों के बौद्धिक, मानसिक, नैतिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास पर जोर दिया जाता हैं। महाविद्यालय द्वारा 2012 से "****अपोलो जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च****" राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक शोध पत्रिका तथा राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक पत्रिका* ***"अनुदीप्ति"*** *का प्रकाशन किया जाता है। आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के तहत् महाविद्यालय को गौरवान्वित करने वाली विभिन्न गतिविधियॉ एवं अनेक कार्यक्रम संपादित होते रहते है, जैसे–महाविद्यालय में दो राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ जिनके विषय* **"Changing Scenario of Teacher Education in Globalization"** ***तथा*** **"Emerging Issues in Teaching Present status & Challenges"** *एवं अंर्तराष्ट्रीय सम्मेलन जिसका विषय* **"Interdisciplinary Research On Advancement Of Life, Research, Modern Education And Medicinal Life"** *रहा।*

विगत 10 वर्षों से सद्भावना कार्यक्रम का आयोजन किया जाता रहा है, जिनका उद्येश्य विभिन्न महाविद्यालयों एवं विद्यार्थियों के मध्य सामंजस्य एवं सहयोग को बढ़ावा देना

*है। इसके अंतर्गत विभिन्न अंर्तमहाविद्यालयीन प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है एवं विजेता महाविद्यालय को महाविद्यालयीन प्रबंधन की ओर से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जाता है। समय–समय पर महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए अतिथि व्याख्यान आयोजित कर विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता है। प्रतिवर्ष पालक शिक्षक संघ की बैठक आयोजित की जाती है, जिसमें पालकों को महाविद्यालयीन गतिविधियों से अवगत कराकर महाविद्यालय की गुणवत्ता में बढ़ोतरी हेतु सुझाव मांगे जाते है एवं दिये गये सुझाव पर त्वरित कार्यवाही की जाती है। **'शोध प्रविधि'** प्रकरण पर कार्यशाला का आयोजन कर डॉ.लिशी कोशी, माउन्ट कार्मेल कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर वुमेन, कोट्टायम, केरला को आमंत्रित किया गया। प्रतिवर्ष शारदीय नवरात्र उत्सव में गरबे का आयोजन कर धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया जाता है। हिन्दी दिवस मनाया जाता है जिसमें हिन्दी के अधिकाधिक उपयोग पर बल देकर राष्ट्र भाषा की महत्ता से विद्यार्थीगण अवगत हो सके। **''विधिक साक्षरता शिविर''** आयोजित कर अपोलो परिवार के समस्त सदस्यों को कानून संबंधी धाराओं एवं नियमों की जानकारी दी गयी।*

*समय–समय पर वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत् फल, फूलदार एवं औषधीय पौधे महाविद्यालय प्रांगण में रोपे जाते है, विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते है जैसे– ग्राम महमरा में **''निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर''** लगाया गया जिसमें जिला चिकित्सालय के नेत्र रोग चिकित्सक, नेत्र सहायक अधिकारी एवं चिकित्सकों द्वारा 125 ग्रामवासियों का नेत्र परीक्षण किया गया, गाँव के शालेय छात्रों को महाविद्यालयीन प्रबंधन की ओर से निःशुल्क चश्मा वितरित किया गया। रक्षा टीम द्वारा समाज में व्याप्त विसंगतियों जैसे– महिलाओं और बालिकाओं की असुरक्षा, दुर्व्यवहार एवं उत्पीड़न को समाप्त करने हेतु **''महिला एवं बालिका सुरक्षा जागरूकता''** कार्यक्रम एवं कार्यशाला के अंतर्गत महिला कर्मचारी, एवं छात्राओं को प्रशिक्षण दिया गया और महिला सुरक्षा कानूनों की जानकारी दी गई। प्रतिवर्ष विद्यार्थियों के सामान्य स्वास्थ्य की जॉच चिकित्साा विशेषज्ञों को आमंत्रित की जाती है एवं उन्हे उचित उपचार और परामर्श दिये जाते है। एलुमिनि संघ के सदस्यों द्वारा विभिन्न सामाजिक और सामुदायिक कार्य आयोजित किये जाते है जैसे– एलुमिनि संघ के सौजन्य से ब्राईट मंदबुद्धि एवं मूकबधिर विद्यालय, कादम्बरी नगर में विशिष्ट बालकों हेतु **''सृजनात्मक प्रोत्साहन कार्यक्रम''** तथा गोद ग्राम महमरा के ग्रामवासियों को डेंगू से बचाव हेतु उपचार व सुझाव बताये गये जिसमें विद्यार्थियों द्वारा गाँव में घर–घर जाकर डोर टू डोर ग्रामवासियों को जागरूक किया गया तथा गोद ग्राम महमरा साक्षरता अभियान के तहत् पुस्तक एवं पाठ्य सामग्री वितरित की गई। समय–समय पर अपोलो परिवार के सदस्यों हेतु व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम हेतु आयोजित किये जाते है। **''एजुकेशन एक्सचेंज प्रोग्राम''** के*

तहत् अपोलो महाविद्यालय, अंजोरा, दुर्ग (छ.ग.) एवं अरिहंत कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पुणे (महाराष्ट्र) के मध्य ज्ञान, शैक्षिक विचारों एवं शैक्षिक तकनीकों का आदान–प्रदान किया गया, जिसमें दुर्ग, भिलाई एवं रायपुर में विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों को शैक्षिक भ्रमण कराया गया एवं ***'आर्ट एंड क्रॉफ्ट'*** *की कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसके लिए श्रीमती विनिता गुप्ता (पिडिलाईट सुपर टीचर) को आमंत्रित किया गया एवं डॉ. भूपेन्द्र कुलदीप उपकुलसचिव, दुर्ग विश्वविद्यालय को आमंत्रित कर व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके साथ ही ग्राम अंजोरा एवं थनौद की शासकीय शालाओं में अपोलो एवं अरिहंत कॉलेज के प्रशिक्षणार्थियों ने जाकर समूह शिक्षण प्रदर्शित करते हुए कक्षा शिक्षण किया, अंत में महाविद्यालयीन परिसर में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संचालक श्री संजय अग्रवाल द्वारा अरिहंत कॉलेज पुणे की कार्यक्रम प्रभारी एवं प्रशिक्षणार्थियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार एजुकेशन एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत् अन्य राज्यों के महाविद्यालयों से संपर्क स्थापित कर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर शिक्षा ज्ञान एवं कलाओं का आदान प्रदान किये जाने की योजना सफलतापूर्वक संपादित हो रही है। अपोलो महाविद्यालय को दुर्ग विश्वविद्यालय से कुश्ती और उच्च शिक्षा विभाग से कबड्डी प्रतियोगिताओं (छात्रों हेतु) के आयोजन का दायित्व प्रदान किया गया। महिला प्रकोष्ठ के तत्वाधान में* ***''अन्तराष्ट्रीय बालिका दिवस समारोह''*** *के तहत् **''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ''** सप्ताह में अपोलो महाविद्यालय आस–पास के गाँव की शालाओं में शपथ ग्रहण, रैली, वृक्षारोपण कार्यक्रम एवं नारालेखन, ड्राईंग, पेंटिंग प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई एवं विजेताओं को महाविद्यालयीन प्रबंधन की ओर से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार वितरित किये जाने की योजना बनाई गयी है। ग्राम गनियारी की महिलाओं को स्वरोजगार संबंधी प्रशिक्षण दिये गये साथ ही गोद ग्राम महमरा में वृक्षारोपण किया गया।* ***राष्ट्रीय सेवा योजना*** **(NSS)** *ईकाई के तत्वाधान में विभिन्न सामाजिक एवं सामुदायिक कार्य आयोजित किये जाते है। जिससे विद्यार्थियों में सामाजिकता का विकास हो सकें जैसे–स्वच्छता ही सेवा'' पखवाड़ा के तहत् विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन महाविद्यालय में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि दुर्ग ए.एस.पी. श्री शशिमोहन सिंह जी रहे तथा अध्यक्षता जिला एन.एस.एस. समन्वयक अधिकारी डॉ. आर.पी. अग्रवाल जी ने की। रक्तदान शिविर में कुल 60 यूनिट रक्तदान किया गया, जो रेडक्रॉस सोसायटी, रायपुर को प्रदत्त किया गया। संविधान दिवस मनाया गया, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों को शासकीय वेटनरी कॉलेज का भ्रमण कराकर पशु पक्षियों के प्रति बुनियादी कर्तव्यों के विशय में जागरूकता तथा पशु अधिनियम के संशोधन संबंधी जानकारी डॉ. वंदना भगत्, वेटनरी कॉलेज द्वारा दी गई। सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया*

गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम जिसमें स्वयं सेवकों द्वारा गॉव की साफ–सफाई, वृक्षारोपण, खेलकूद प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इसके साथ ही मैत्री डेंटल कॉलेज, अंजोरा, दुर्ग के सहयोग से अपोलो परिवार के सदस्यों का ***दंत परीक्षण*** *किया गया और अनाथालय में खेल सामग्री तथा मिठाई वितरित की गई। पुलगाँव वृद्धाश्रम में एक दिवसीय* ***स्वच्छता कार्यक्रम*** *एवं फल वितरण किया गया, यूनिसेफ द्वारा संचालित तीन दिवसीय* ***"सुरक्षित पारा सुरक्षित लईकामन अभियान"*** *के तहत ग्राम अंजोरा दुर्ग व राजनांदगाँव, थनौद में डोर टू डोर अभियान के तहत बाल अधिकार के प्रति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा दुर्ग नगर निगम द्वारा आयोजित* ***"गाजर घास उन्मूलन"*** *कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय में अध्ययनरत एवं उत्तीर्ण छात्रों को व्यवसाय के अवसर उपलब्ध कराने हेतु प्रतिवर्ष महाविद्यालयीन परिसर में प्लेसमेंट का आयोजन किया जाता है। जिसमें विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित कर साक्षात्कार का आयोजन किया जाता है। प्रतिवर्ष वार्षिक उत्सव* ***"ब्लिट्ज"*** *जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएँ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है एवं विजेताओं को महाविद्यालय प्रबंधन की ओर पुरूस्कृत एवं सम्माजित किये जाते है। समय–समय पर फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम आयोजित किये जाते है। महाविद्यालय में विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम अधिकाशतः उत्कृष्ट ही रहा है। निर्धन छात्रों हेतु महाविद्यालय की ओर से विशेष छात्रवृत्ति की सुविधा प्रदान की जाती है। महाविद्यालय यहॉ अध्ययनरत विद्यार्थियों को समस्त शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराता है, जिससे समस्त विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके जो उन्हे अच्छा नागरिक बनाने के साथ अपने उद्देश्य की पूर्ति में सहायक सिद्ध होंगे।*

****